अंक : अक्टूबर-दिसम्बर, 2022

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अक्टूबर-दिसम्बर, 2022

बरस : 46 अंक : 1 पूर्णांक : 157

संपादक
श्याम महर्षि

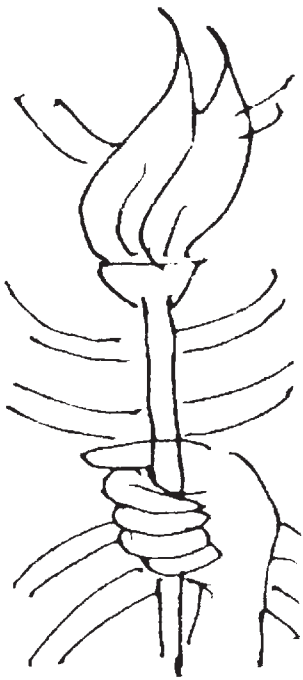

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com

ग्राहक शुल्क
पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

राजस्थानी री मंचीय कविता री कूंत जरूरी — *श्याम महर्षि* — 3

चितार

आपलिखी — *कल्याणसिंह राजावत* — 4

कहाणी

गड़बड़ — *श्रीभगवान सैनी* — 11

ऊजळी गंगा : मैली गंगा — *राजेन्द्र जोशी* — 16

आलेख

गजानन वर्मा रै गीतां री घमक — *श्याम महर्षि* — 24

कविता

अबोली मां / मनीप्लांट / मनु गांधी री डायरी — *शारदा कृष्ण* — 31

कान्हजी—आठ कवितावां — *ओम नागर* — 35

मैण ज्यूं पिघळजा / भाव म्हारा गूंथी है गजल

मिनख : अेक सवाल / यूं ई मती मानजै — *सुशील एम. व्यास* — 37

समझो थे तो म्हनैं बतावो / कसक काटणी पड़सी

धरती करै धारण / टाबरां रा सुपनां खातर — *किरण बाला 'किरन'* — 39

भाग्यो कोइनै म्हूं — *सी.अेल. सांखला* — 41

गद्य कविता

जंगळ / माळा / रात रै अंधारै उजास हो

थांरी-म्हारी जिंदगाणी / धोरै ऊभो — *कमल रंगा* — 43

बाल-कविता

होळी / गांम / ऊंदरा / तिरंगो / मेढक — *दीनदयाल शर्मा* — 45

गीत

वीर महाराणा प्रताप — *डॉ. निर्मला शर्मा* — 47

टेम आयगो खोटो — *दीपसिंह भाटी 'दीप' रणधा* — 48

व्यंग्य

कुण कैवै रामराज कोनी — *छत्र छाजेड़ 'फक्कड़'* — 50

संस्मरण

सुरसती मासीसा — *मनोहर सिंह राठौड़* — 53

कूंत

जुग रै जथारथ सागै समाजू हित सांधती : अदीठ डोर — *विश्वनाथ भाटी* — 57

मुरधर की माटी को मोल बतावती : होइ सुहागण रेत — *नन्दू राजस्थानी* — 60

आंख्यां आगै बीत्योड़ी बातां रो बुगचो : दीठ दरसाव — *सन्तोष शेखावत* — 63

संपादकीय

राजस्थानी री मंचीय कविता री कूंत जरूरी

अेक बगत हो जद राजस्थानी कविता मंच रै मार्फत ई लोगां तांई पूगती ही। औ बो बगत हो जद ना तो राजस्थानी री आधुनिक कै स्वच्छंद कविता रो इत्तो चलण हो अर ना ई आं कवितावां नै छापण-छपावण रा पूरा संसाधन। आजादी रै पछै ई जनकवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' री 'आ जनकवि री जुगवांणी, आ कदै न चुप रह जाणी' अर बीकानेर रा मालदान देपावत 'मनुज' रो गीत 'धोरां वाळा देस जाग रे...' जैड़ी काळजयी रचनावां मंच सूं होय'र ई लोगां रै हियै उतरी ही। उणरै पछै तो मेघराज 'मुकुल', रेवतदान चारण, गजानन वर्मा, लक्ष्मणसिंह रसवंत, कल्याण सिंह राजावत, भीम पांडिया, मोहम्मद सदीक, बुद्धिप्रकाश पारीक, माधव दरक, रघुराजसिंह हाड़ा, दुर्गादान सिंह गौड़, भंवरजी भंवर अर कानदान 'कल्पित' आद मोकळा मंच रा कवि अर गीतकार हुया जका आपरी छंदबद्ध कवितावां अर मीठा-मधरा गीतां रै पांण राजस्थानी रो डंको आखै देस बजायो।

राजस्थानी मांय आधुनिक कविता री सरुआत करणियां कवि मंच रा आं कवियां नै चलवां-चेजारा अर आंरी रचनावां नै सिणगारू अर बजारू कविता-गीत बताय'र 'मंच' रै अेक खूंटै सूं बांधण री आफळ करी, पण आ उणां री आफळ ई रैयी। आं जन कवियां री कवितावां अर गीतां सूं तो राजस्थानी मंच रातो-मातो हुंवतो रैयो अर आं री रचनावां जनकंठां सूं ई गूंजी। दूजै कानी आधुनिक कविता रै नांव माथै कवितावां में नितनूंवा प्रयोग अठै तांई कै अकविता अर गद्य-कविता लिखणियां कवियां री पोथ्यां पुस्तकालयां री आलमारयां री सोभा ईज बण सकी।

राजस्थानी कविता री अेक लूंठी परंपरा रैयी है अर ऊपरला सगळा कवि इणीज परंपरा नैं आगै बधावण रो बीड़ो उठायो हो, जिणां री कूंत अजै बाकी है। आधुनिक कवियां मांय सूं ई अेक ओंकार श्री आं कवियां माथै 'जनकवि री अवधारणा' नांव सूं आलोचनात्मक पोथी लिख'र पैल ई करी ही, पण उणरै पछै आं कवियां री कूंत अजेस होवणी बाकी है।

—श्याम महर्षि

कल्याणसिंह राजावत

आपलिखी

जितरा गांव म्हारै जिलै नागौर में है, म्हनैं सै सूं चोखो अर प्रीत भरयो गांव चितावो लागै—म्हारो गांव चितावो। जूनी मारवाड़ रियासत री अगूंणी सींव अर नौ कूंटी मरुधरा री अेक कूंट है म्हारो गांव, पण अठै पढण रो ढंग-ढब नीं व्है सक्यो। उठै थांणो अर सायर थांणो जरूर हो, है, पण कक्कै बारखड़ी री सरुआत ई म्हनैं जोधपुर री जबर जूनियर मिलट्री स्कूल सूं करणी पड़ी। पछै बेगो ई उठै सूं छोड-छाड'र मोलासर आय लियौ। मिडिल मोलासर सूं, मैट्रिक कुचामण सूं अर इंटर डीडवाणै सूं करी। कुचामण सूं कविता रो चाव चढ्यो, जिणरै पछै स्कूल अर कालेज री प्रेसीडेंटी करी अर जको भटकाव डीडवाणै सूं चाल्यो बो आज तांई बियां ई चालै है।

जयपुर रै महाराजा कालेज सूं बी.अे. तो करी पण जोर घणो पड़्यो, क्यूंकै अठै सूं बेसी ध्यान सम्मेलणां कांनी व्हेगो हो। स्टेसण रोड रै होस्टल नै छोड'र झोटवाड़ै रै श्री भवानी निकेतन में आयो अर अठै सूं आगै 1962 सूं 1972 तांई रो अेक दसक ठैराव रो दसक है। गुरुजी री बंधी-बंधाई लीकां माथै कवि री उछळ-कूद नीं व्है सकी अर सांच तो आ है कै अठै कविता रै सिंवाळ सा आयगा। हां, अब एम.बीएड. हूं।

भायप री भेळप सगती रो सरूप अर ओळखाण है। गांव बास सूं अळगी उण री पूछ है मानता है। जियां गंगजी ठाकरां रो

चितावा हाऊस, 53, शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर 302012 रचना सारू संपर्क : 9414718086

 ISSN : 2320-0995

कांई कैवणो। रामराजी है, ठाठ-बाट है। खंखारै सागै बीसूं लठै ऊठै, बांनै 'तूं' कैवणियो कुण? ठाकरी ठसकी है। दादोसा रो औ मिजाज म्हनैं याद है।

आजादी पछै राजस्थान में कास्तगारी कानूनां सूं केई बखेड़ा व्हिया। कंवरसा (पिताजी) भंवरसिंघ जी कोई 15 बरसां सूं जमीनी मुकदमा लड़ता रिया अर अेक तहसीली नेता रै रूप में चावा व्हिया। पण म्हारै अंतस माथै इणरो असर पड़्यो तो औ कै म्हनैं अेकलो रैवण में सुख सो लागण लाग्यो। पालणै सूं आंगणै अर आंगणै सूं कवूं कोल्डी में आतां-जातां केई हुक्का री गुड़गुड़ाटां सुणी। चिलम रै धुंवा सूं नासां फड़की अर स्याफी भेवण री आंगळ्यां गांव-गुवाड़ में कद डंडिया खेलण आई, धमाल गाता कंठां सूं कद गीतां री गुणगुणाट व्हेण लागी औ बतावणो दोरो कोनी तो इत्तो सोरो ई कियां व्है सकै?

अेक बार बाई जी महाराज (फूली बाई) गांव पधार्‌या। सत संगत हुई। म्हैं दो-तीन दिन बांरै सागै ई रैयो। बै सीख करी तो म्हैं अळगै तांई पूगावण नै गयो। पाछो फिरतां ई आंसुवां री धारां छूटी, धोरां माथै अणमणो सो बैठ्यो रियो। अेक सवाल उठ्यो—'गुरु समझ न पाया, कैसी है राम की माया' अर इयां ई भगती री लैर में सैकड़ी भजन बणा नांख्या। हालतांई गांव री भजन मंडळ्यां बांनै गावै। अेक आतमतोस इणसूं मिल्यो।

प्रीत कद उपजी? क्यूं उपजी? इण रो जबाब तो कोनी दे सकूं पण डील री बणगट रै सागै-सागै ई लुकी-छिपी ताकझांक सुरू व्हे जावै। मौलासर में अेक रामलीला देखण गियो अर रासलीला सीख आयो। प्रेम री पाती, इसारां अर संदेसड़ां री नीं टूटण आळी अेक सांकळ-सी बणगी। सुगण मनातो, सरोदो लेंवतो कै आज उण सूं बात करण रो मौको मिलै। सपनै में सुगन ई सुनग, सुगंध ई सुगंध। औ बावळापणो नीं व्है सकै, आ तो ऊंची समझदारी है। बियां हर बावळो आपनै ज्यादा समझदार ई समझ्या करै। औ हिवड़ै रो दरबार, निजरां रो बौपार मौलासर छूटतां ई छूटगो पण उण प्रीत री पाती उण अदीठ उणियारै नै आज तांई लिख रियो हूं। अणभोगी वांछां प्रीत रा गीत बणगी। सिणगार रा प्रतीक बणगी। अब म्हैं भजनां री ठौड़ प्रीत रा गीत गावण लागगो, अजै गायां जावूं हूं। प्रीत म्हारै कवि रो जीव बणगी।

म्हैं प्रीत रै कितरा पळोथण लगाया पण फलको नीं बेल सक्यो। म्हैं प्रीत रा कितरा बीज चोब्या पण फाल कुणसै ई बूंटै नीं आयो। म्हैं प्रीत रा कितरा गीत उगेर्‌या पण कोई सुर रै सामेळै नीं आयो। इण कंवारी प्रीत री जेवड़ी रो बळ्यां पछै ई बळ कोनी नीसर्‌यो। सबदां रै सासरै प्रीत आज तांई जावै है अर आपरै भावां रै भोपाळ नै रिझावै है, खिलावै है, भरमावै है। प्रीत री पातळ कद तांई पुरसी रैवैली—आ म्हारो कवि नीं बखाण सकै अर नीं म्हैं ई क्यूं कैय सकूं। म्हे दोन्यूं अेकमेक हां। आज प्रीत आखरां में उळझगी। आखर

अचपळा घणा, पण अचपळाटो तो पाड़ौसी तक नै चोखो लागै—औ सांच है। बाण छोड्यां नीं छूटै—जोर कांई ?

उणियारै री आखड़ती ओळ गीतां सागै कद आपरी पिछाण करा जावै, कद मनड़ै री बात कैय जावै अर खुद सिरजक ई नीं जाण सकै। जे बो आ जाणतो व्है तो आपरी इतरी बडी कमजोरी दरसां नीं सकै। जे दरसा देवै तो बा कविता नीं व्हे सकै। कविता तो जीयोड़ी जिंदगाणी है जकी अणजाण में बखाणी जावै।

जागणो अबखो लागै, मन अर तन नै अबखाई-सी व्है। पण मन री मरजी चालै कोनी। यादां री पासवान नै गोखड़ै ऊभी देखतां ई नींद बाईसा नैणां री पोळ कानी पधारै, पसवाड़ा फेरतै डील नै बिछात माथै सळ पटकती छोड'र मन रो पंछी अळगी-अळगी, ऊंची-ऊंची उडाण माथै उड जाय। अणदेखी, अणसैंधी सूरतां सूं सगपण करतो फिरै अर अै ई अणछेड़ी, अणभोगी वांछावां म्हारै हिवड़ै रै अेड़ै-छेड़ै जका राग गाया जावै बांनै भूलणो म्हारै बूतै री बात कोनी। इण में दो सांच नीं कै आदमी रो बूतो आपरो अेक ई व्है। स्यात निंदाळू आंख्यां सूं कवि री बांनगी निरख्या करै। स्यात उणींदी रातां में ई कवि नै रोसणी मिलै। स्यात पसवाड़ां रै पलटाव सूं कवितावां में रस आया करै।

डागळै सूं निजरां रो पसराव पण सारली बोरड़ी, खेजड़ी अर खाखलै रो ढेर टिपै नीं। खितिज रै पारूंपार कीं आपरी चीज लुकायोड़ी लागै। सोधतां-सोधतां ई पाछी नीं मिलै। बा रतन है कै सोनो, कै कांई ठा कांई चीज ? पण है अणमोली, अणतोली। इण दरसाव में डूंगर, भाखर सी मोटी पड़छाया कोनी आवै पण अेक छोटी-सी मूरत आय'र थम जावै। स्यात आई है बा घणमोली चीज जकी नै म्हैं सोधूं... हां आ प्रीत ई व्है सकै। दूसरी बसत री इतरी बिसात कोनी, इतरो बूतो कोनी।

म्हारो कवि कदेई बणावट अर ढोंग में कोनी उळझ्यो। बो चायै पैरावै रो व्हो, चायै कैवण रो, बतळावण रो। अेक सादबूदै तरीकै सूं ई आपरी ठौड़ बणाई। 'रस भींणी ओळ्यां ई काव्य है'—आ ई समझ सामीं राखी। गुट, रौळां, टोळां री गैल में, पारटी अर वादां रै रैळ में नीं भरमीज्यो। सुभाव रै हस्तै ई आपनै राख्यो। केई लोग आज रै जमानै मुजब इण तरीकै नै गळत समझै, पण आ समझ भी तो गळत व्हे सकै ?

मंच अेक परपंच बणगो। बै कवि जका आपरी मंच सूं पढै, गावै अर अेक बड़ी जमात नै आपरी बणा लेवै, मंच रा कवि है। आंरै सिवाय बै कवि जका कागजी मंच पर ही है—जका कविता तो लिख दी, आखर रा भाखर तो खड़ा कर नांख्या पण भाखर चढ बोलण रो पगां में सत कोनी बपरायो।

आ कित्ती हीण बात है कै अेक आदमी आपरी लिखी कविता पढ'र सुणाय ई नीं सकै। भैंस काळी व्है, पण काळी छांगी सूं बिदकै, बिचरै। स्यात आपरी धौळप दरसावण री तरकीब अजमावै। अर इयां ई अेक स्वयंसिद्ध बाळमीक्यां री जमात खड़ी हुई जकी कागज पर ई मोटा आखर बिखेरया—मंच रा कवि गळैबाज है, मसखरा है, सुर सूं

रिझावणियां है, लोकगीतां री धुनां पर दिसावरां में राजस्थानी काव्य रो रूप बिगाड़णियां है। आ बात सांची है ही कै आदमी दूजै री तारीफ सूं रीसां बळै।

राजस्थानी काव्य मंच रो इतियास आजादी री लड़ाई सूं चाल्योड़ो है। राजपुतानै री अणभणी जनता नै आजादी री बात बतावण नै खुद री भासा अर विसेस ढंग सूं कैवणो जरूरी हो। जयनारायण व्यास, माणकलाल वरमा, गणेसीलाल उस्ताद, हीरालाल सास्त्री जैड़ा नेता मंचां माथै गांव-गुवाड़ में गाया, नाच्या, चंग री चिमटी अर ढोल रा ढमक्कां सूं राजपुतानै नै चेतायो, अंग्रेजी राज नै भगायो।

आंरी लकब माथै मंच रो बूतो समझता थकां आजादी रै पछै राज नै, सुराज नै जमावण खातर ई मंच टेक्नीक आजमाई गई जिकी घणी कामयाब रयी। विकास गीत अर प्रजातंत्र रो अरथ समझावणिया मंच, सत्ता विकेन्द्रीकरण रो दिवलो राजस्थान में ई जगायो, आ बात तो सगळी दुनियां में उजागर है।

प्रयोजन धरमी मंच आपरी मंजल पाई पण इणरै सागै ई अेक खुद रो प्रयोजन मंच पर पगफेरो करयो। मुकुल आपरी सैनाणी इत्तै ऊंचै सुर में गाई कै सेक्रिट्रियेट री कुरसी मिलगी। बस अेक जवानी नै अफसरी निगळगी। राजस्थानी भासा रै हित में अणचिंत्यां ई बडो काम व्हैगो।

हिंदी कवि सम्मेलणां रा अगुआ कवियां री जमात सागै गजानन वरमा अर सत्य प्रकास जोसी आया अर नेपाली अर नीरज री जीपां ई सारै देस में गीतां री घमरोळ करी। क्यूं इलाका विसेस में रेंवतजी री इन्कलाबी आंधी चाली पण आंध्यां लावणियां झूंपड़ी नै बड़ री साखां छोड'र सूरज तारां री, दिवला-बाती री राजनीति में उळझगा अर आंधी निकळगी।

1960 पछै राजस्थानी कवि सम्मेलणां रो निजू मंच बण्यो। जयपुर आकासवाणी अेक-दोय आखै देस रै राजस्थानी कवियां रा सम्मेलण करया, ज्यांसूं अेक टीम उजागर व्ही अर लारला नांवां रै सागै रसवंत, हाड़ा, राजावत गीतकार रै रूप में अर विमलेस, पारीक आद हंसोड़ कवियां रै रूप में मंच पर थरपीज्या। आ टीम देस रै च्यारूं कूंटा राजस्थानी भासा नै बोलती करी।

सेखावाटी रा कुछ लोग जका मूळ रूप सूं कथावाचक हा, राजस्थानी कविता रै सागै लगाव देख'र दिसावरां में आपरै जजमानां नै कविता सुणावण लाग्या अर अै ई कविता नै सस्ती बणा दी। पण अै कवि रै रूप में सिरै कोनी गिणीज्या। अै सार्वजनिक नीं व्हेय'र 'कुटुम्बी' ई रैया।

सन् 1962 अर 65 री लड़ाई में मंच पर जोस रा काव्यपाठ घणा चाल्या। देसभक्ति री लैर सी आई पण 1971 री लड़ाई में इणरो रूप रिगल ठिसकोळी तांई आयगो। व्यंग

रै नांव अलड़-बलड़, अंट-संट बिना सींग-पूंछ री बातां रै सागै ई अेक भांडगिरी पुखता व्हेण लागी। गीत री गमक में गम्योड़ा कनरसिया श्रोता कविता री वाहवाही सूं निकळ'र ठहाकां, हाकां में भरमीजगा। 1972 रै मंच माथै चुटकलां री चटणी सूं कविता रो स्वाद बणावणिया धोबी रै कुत्तै ज्यूं व्हेगा है। वै हिंदी कविता बोलै पण राजस्थानी रा कवि बाजै। मंच नै बजारू बणावण में आंरी तुरत बुद्धि धार पर है, पण पाणी बिना रेत सूखती सी लागै।

मंच भासा नै जणै-जणै लग पूगती करण रो सै सूं बेसी अर कारगर साधन है। मंच रै सागै ई भासा री मानता री आवाज उठी है। इण सांच नै मंच सूं अळगा रैवणियां नीं मानै तो औ बांरो निसरड़ापणो है। धीठ रै पूठ, पग नीं व्है, मूंडो ई व्हिया करै।

जद तांई मंच माथै व्यंग अर मसखरा कवियां रो घणो रौळो नीं बध्यो हो, तद तांई बो सरसती मा री तसवीर सूं सजायो जावतो, धूप, अगरबत्ती खेई जावती। कवि लोग 'वाणी पुत्र' कैवीजता। मैकता गळहार अर बिरदावली सुण'र कवि नै अपणै आप में अेक खुसी व्हेती। जनता भी कवि नै विसेस मिनख समझती ही, पण जद सूं कवि सम्मेलण मनोरंजन मेळो बणगा, आंरी सगळी लागलपेट बीत्योड़ी बातां व्हैगी। कवि सीधो मंच माथै आय'र गाडी रो टैम पैली पूछैला अर जबान चढ्योड़ी कवितावां सुणा'र लिफाफो लेय'र परो जासी। सम्मेलण आज अेक वौपार है। आप-आपरा धड़ा बण्योड़ा है, सो धड़ल्लै सूं मार्केट माफिक माल त्यार करता थका बेच रिया है, बिक रिया है। 'बो मरग्यो रे' कहतां ई जनता हंस पड़ै तो कवि नै तो लाख लाध जाय। इणमें कवि रो कांई दोस?

तो इयां अै धाड़ेती कवि धड़ा बणा-बणा'र मंच माथै धाड़ा पटकै। आं में सूं केई लोग तो दलाली भी करै अर सम्मेलणां रा ठेका भी लेवै। आ अेक मंच री राजनीति है जकी पनप रैयी है अर इण रो उपसंहार रामभरोसै ई है।

म्हैं म्हारै कम बोलणियै सभाव रै कारण अर अेकलो रैवण री आदत मुजब कविता नै मंचू बणावण री कोसिस नीं करी। जिकी कवितावां अर गीत सम्मेलणां में जम्या, बांरै वास्तै कोई खास मिजाज कोनी बणायो अर अर जका पत्रिकावां, किताबां में छप्या, कोई तपस्या रा फळ नीं हा। रचणा जकी घूमतां-घामतां मूंडै चढी, क्यूं पुखता व्ही अर जठै म्हैं साहितकार रै गुमेज में लिखी, बै क्यूं खुदाखुद ई पोची रैयगी।

'आयो तो हुवैला', 'मालण', 'सलांम' अर 'रामराज है कठै', पैली म्हनैं याद व्ही अर पछै कागजां में लिखी। साइकिल पर मन री मौजां घूमतां, 'हिचकी' आयगी अर होस्टल रै हुड़दंग में 'सलांम' व्हेता रिया। अेक जगां बैठ'र लिखणो अबखो लागै अर पड़्यां-पड़्यां कम लिख्यो जावै, बस इयां ई घणकरी कविता आधी पड़धी बणबणा'र रैयगी अर फाट्या-फूट्या पानड़ां में अठै-उठै समपूरण व्हेण री उडीक में उकड़ू व्हे मेली है। आजकालै तो टाबरां री कुचमाद अर रौळां में भावुक व्हेण रा खणां री कमी लखावै।

भीड़ रै साम्हीं कविता पावसै कोनी। गीतां रा गवाळ किसड़ै धोरै चढ ढेरै? थे आ ई कहल्यो कै अैड़ी बाखड़ी हालत तो चोखी कोनी... नीं व्हेली सा।

अकल रा अचपळा, बानां में बडेरा बड़बोला, सुध सुंवार गत गुंवार म्हैं नै म्हैं ऽऽऽऽ बणा'र दरसावणियां, आखर सूं अगतेड़ा अर भावां सूं बाथेड़ा करणियां छंदां नै रगदोळणिया आपनै नुंवां कवि कैवै। गतगुवैं री बात भलांई मत व्हो पण नूंवो कैवावण रो उमाव, उछाव, गुमेज री भांत बणा ई न्हांखै। इण भांत री पांत में नांव लिखावण नै जाणै-अणजाणै म्हैं भी म्हारी कलम चलाई। छोटी अर बडी घणीसारी कवितावां कर न्हांखी। कैवण रो सपाट तरीको, ओळ्यां छोटी-मोटी कर'र लिखण रो नूंवो ढंग, कोई घणी 'खींच' कोनी राखै—कीं अैड़ो लखावै। पण बात रो सांच अर सांच री पकड़ इण में ज्यादा है। बणावट अर झूठा गहडम्बर सूं अळगो व्हेय'र ई कोई बिचार करयो जा सकै, कोई सांच कैयो जा सकै। 'ओ नवी बीनणी', 'ओ कुण', 'मैंदी अर मसांण', म्हारी अैड़ी ई कवितावां है। अैड़ी रचनावां सूं म्हनैं छपास सुख मिल्यो। बछेरी किलोळ अर अछेड़ी गीतां री धुन सगळां नै ई चोखी तो लागै ई, अैड़ी ई है आ नुंवी कविता—बोछरड़ी कविता।

म्हैं मंच माथै पैली आयो अर कविता पछै करण लाग्यो। अेक पैरोडी कमलनयन धोखै सूं कुचामण हाईस्कूल रै चूंतरै सूं बुलवादी अर उणरी ताळ्यां अर वाह-वाह म्हनैं म्हारै 'म्हैं' सूं पिछाण करा दी। उण दिन (1956) सूं आज (1973) तांई माइक री आंख सूं आखो देस देख लियो। म्हारै गीतां रै पंख लाग्या अर म्हनैं व्हियो मंच सूं लगाव। म्हे दोनूं ई निभ रया हां, चाल-ढाल में तो कोई फरक मैसूस करण जोग कोनी पण आजकाल केई लोगड़ा कैवै है कै म्हारो पेट दून बणण लागगी है। क्यूं आंख्यां गुलाबी रैवण लागी है। कविता रो सगपण डील-डौल सूं करणियां कुचरणीगारा नीं तो कांई है? बूढा माजी गांगरत नीं करै तो बांरा दिन कियां कटै, रोटी कियां पचै, पटै? डैणां रो थूंक बिलोवणो गुजरी गाथा नै बीती बातां रै मिस चीकणै लूण्यै रो लूंदो बणा'र काढणो चावै। बोखली बोली ओखळी रो स्वाद जाणै, अर जाणै सो बखाणै—खैर जावण द्यो।

म्हनैं मचं सूं लगाव जरूर है पण म्हैं मंच रो कोनी बण सक्यो। गीतां नै बिना 'एटमोसफियर' बणायां अर भूमिका बांध्यां सीधै सपाट तरीकै सूं 'अटेनसन' व्हेय'र सुणा दिया। अब गीत जाणै अर सुणणियां जाणै। देखण में आई कै अै गीत दूसरा तीसरा दौर में ई सुणाया जा सक्या। रेजगारी छंट्यां पछै काम रा लोग बचै।

राजस्थानी भासा में लिखण रो अेक अंदरूणी सुख है, गूंगै रै गुड़ ज्यूं बखांण्यो नीं जा सकै। पैलीपोत हिंदी में कंविता करी अर दो च्यार जगां बोली, पण जद सूं राजस्थानी री 'झूंपड़ी कविता में पढी तो अेकाअेक इयां लाग्यो कै म्हैं कोई नूंवो काम कर रियो हूं।

म्हारै राजस्थानी कवि री मंच माथै मांग बधती गी अर म्हैं इणनै ई गौरव री बात मानी कै मातभासा रो रुतबो ई म्हारो रुतबो है।

राजस्थानी भासा नै लारै राखण में सै सूं बेसी बै लोग है जका खुद नै 'सर्वोतमुखी' प्रतिमा रा धणी मानै। बांनै इण बात रो घमंड है कै बै हिंदी में भी लिखै है, पण मीठै जैर रो असर होळै-होळै व्है। आ बात याद राखणजोग है। आज हिंदी जबान सौत-सी अगूंणै राजस्थान सूं आती-आती जैपर री गळ्यां में चटकां-मटकां घूमण लागी है। आकासवाणी हिंदी में जगावै अर हिंदी में ई लोरी गावै। इणनै आज तांई आपां खतरो कोनी मान्यो। आछा-आछा सम्मेलणां में राजस्थानी भासा रा मानीता लोग आ ई कैवै कै म्हांनै हिंदी सूं विरोध कोनी तो आ समझणो चाईजै कै बांनै राजस्थानी सूं कोई जीवण-मरण रो हेत कोनी। बै तो कोरा 'पब्लिसिटी' रा भूखा है, आपनै जनता रै दुख-दरद रा सीरी बणावण जोगा कोनी। 'ना' रो मतलब 'ना' ई व्है, अर 'हां' रो 'हां' ई। औ फरक जाणण नै घणो आगो जावण री जरूत कोनी। म्हैं म्हारै 'म्हैं' नै राजस्थानी रो बणायो, इणमें ई म्हनै सुख अर गुमेज है।

(शोध पत्रिका 'परपंरा' रै हेमांणी-अंक सूं साभार)

◆◆

कल्याणसिंह जी राजावत रै गीतां री नूंवी पोथी

खरीदो अर बांचो

पोथी : ल्यो सारो आकास संभाळो
विधा : गीत-कविता
कवि : कल्याणसिंह राजावत
संस्करण : 2022
प्रकाशक : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
श्रीडूंगरगढ़ 331803
पाना : 208
मोल : 400 रुपिया

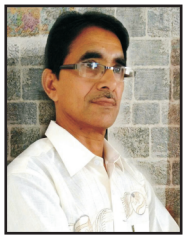

श्रीभगवान सैनी

गड़बड़

अबार इण घर मांय च्यार जणा ई है। बडो बेटो छात माथै कमरै मांय सोवै, छोटियो बारै बैठक मांय अर आप धणी-लुगाई बडोड़ै कमरै मांय। दूरदरसण माथै रामायण खतम होयगी। आगलो सीरियल चाणक्य हो, जिणनैं देखणै री किणी री खास रुचि नीं ही। बियां ई रात रा दस बजग्या हा अर नींद लेवण खातर आडो होवणो जरूरी हो। दोवूं बेटा नै ई सोवण खातर बांरी मां कैयो कै आप-आपरै ठौड़-ठिकाणै जावो। जावता टी.वी. अर बीजळी रो खटको ई बंद करद्यो। दोवूं बेटा आप-आपरै कमरै मांय गया। अबै बेड माथै धणी-लुगाई दोय हा। आखै दिन इंया ई घर मांय पड़्या-पड़्या नैं नींद तो कांई सिर री आवै ही, पण आंख मींच'र सोयां कीं ढबक आवणी ई ही। रात री नींद री होड थोड़ी ई होवै। इण खातर ई बै आंख मींच'र सोवण री आफळ करै हा।

''हें ओ, औ कोरोना कित्ता दिन और चालसी?''

''चालसी बित्ता दिन ई चालसी, कीं नै ठाह है, बियां प्रधानमंत्री अजै ताणी जिकी ई घोसणावां करै बीं मांय नब्बै दिन रो हवालो होवै, जद तीन महीनां तो मान ई ल्यो?''

''बळो, क्यां रो कोरोना है, घर सूं बारै ई नीं निकळण देवै। इंया कांई बारै निकळतां ई बाथ्यां पड़ै?''

''पूछ ई मत, आ बीमारी तो अणचींती-अखभाखी आई है। कीं नै ई ठाह कोनी पड़ै कद, कठै लाग जावै। इण रो कीं इलाज ई कोनी, इण खातर घर मांय रैवणो ई ठीक है।''

चिमनाराम माळी रै कुवै कनै, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राज. 331803 मो. 9460564514

''घर बरताऊ जिंसा लावण खातर तो बारै निकळणो ई पड़ै, टेलीविजन माथै दिखावै नीं, कियां पुलिसआळा लट्ठ बरसावै?''

''इंया सगळां नैं थोड़ा ई कूटै, अै तो फालतू मांय ई हांडता फिरै बांनैं जरकावै।''

''क्यूं, काल ऊपरली गळी मांय केइयां रै घर आगै ई फटीड़ पड़्या हा नीं?''

''हां, तो बै किसा जरूरी काम सारू बारै निकळ्या हा?''

''चलो आ बात तो ठीक, पण अै पान-पुड़िया, जरदै-तमाखू रै ई लोकडाउन कर न्हाख्यो। अबै जिकां री बांण पड़्योड़ी है, बा कियां छूटै।''

''हां, बांरै तो बिचारां रै अबखाई ई है। घणकरां रै तो जरदै-गुटखै बिना कबज ई नीं मिटै।''

''खावणियां तो खावै ई है, चोरी-दावै सैंग मिळै ई है, पण पांच री ठौड़ पचास देवणा पड़ै।''

''देवणा पड़ै तो पड़ण दै, आपां रो कांई लेवै! सैंग मौकै रो फायदो उठावै। अब सोय जावो।''

''आठूं पौर घर मांय कियां आवड़ै, जीव अमूझै। रैयी-सैयी पोती ई नानेरै गयोड़ी है। टाबर घर मांय होवै, तो ई मन लागै। बीनणी घरै आयां म्हारै ई स्सारो होवै।''

''बात तो थारी ठीक है, पण लोकडाउन है नीं, ल्यावां ई कियां?''

''रैवण द्यो, थारी नींवत कोनी दिखै, थारी घणी ई जाण है, राज रा नौकर हो, किणी गाडी री परमिसन लेय'र मंगवाल्यो। थे ई पोती नैं खिलाय लिया। बियां तो थांनै बगत मिलै कोनी। नौकरी माथै दिनूगै निकळो अर रात गयां पाछा आवो तद तांई बा सोय जावै।''

''थारी बात सोळै आनां खरी, देखस्यां कीं सतूनो बैठतो होयसी तो।''

बतळावण करता-करता बांनैं कद ढबक पड़ी ठाह नीं, पण बारा-अेक बजतै-सी बीं रो जीव घबरायो। बा उठ'र आंगणै मांय नाळी कनै आय'र बैठगी। उल्टी हुयी अर पछै ऊबाक, होबरड़ा सरू होयग्या। बीं री ई नींद औछांटा देयगी। छोटो बेटो ई जागग्यो। बो उठ'र कनै आयग्यो। उल्टी-जी-दौरै री टिकड़्यां आगूंच ई बां कनै रैवै। बी.पी. री बीमारी रै कारण सूं महीनै-बीस दिनां सूं बीं रै आ अबखाई होय जावै। बा आंगणै मांय ई पसरगी। बेटो टिकड़ी देय दी, पण होबरड़ा रुकणै रो नांव ई नीं लेवै। बा निढाळ होयगी। सगळो घर बींनैं घूमतो लागै हो।

''म्हैं तो अबैं जायसूं, और तो कीं कोनी, ओ छोटियो परणीज्यां बिना रैयग्यो।'' बा आंख्यां मींच्यां ई बरड़ाई।

छोटियो बेटो मां रै मूंढै कानी देखै लाग्यो। मां री आ हालत देख'र बीं रो काळजो ई घणो बळै हो। बा बेदमाल-सी आंगणै मांय पसरयोड़ी पड़ी ही। टिकड़ी रो असर नीं

होवतो देख'र बो बोल्यो कै बापू, मां रै सुई लगवायां ई पार पड़सी। थे डागदर सूं बात करो।

बापू रै तो पैलां सूं ई काळजो हबोळा लेवै हो। घरधिराणी री आ हालत अर रात री अेक बज्यां रो अबढो बगत, बो ई इण लोकडाउन मांय, टेलीविजन माथै पुलिसिया कुटाई रा चितराम ई बीं री आंख्यां आगै तिरया। अबैं करै तो कांई? और कोई बगत होयां तो बीं खातर कीं अबखो नीं हो।

डागदरां साथै ई बीं री भायलाचारी ही अर अस्पताळ रो स्टाफ ई घणकरो बींनैं जाणै हो। जिकै डागदर री दवाई बीं रै लागै, बो थरू डागदर तो खुद कोरोना सूं डरपीज'र लोकडाउन मांय आपरोअस्पताळ जमा बंद कर राख्यो है। कीं ई होवै, इण अबखै बगत मांय कीं न कीं करणो तो बींनैं ई है।

बो फोन मिला'र आपरै थरू डागदर सूं बात करी। रात री अेक बज्यां ई बो फोन उठा लियो, पण दवाई सारू साव नटग्यो। कैयो कै म्हारो अस्पताळ तो बंद है। बाकी जित्ता ई प्राईवेट अस्पताळ है, सैंग बंद है, म्हैं थानै सुई बताऊं जिकी लगवा द्यो। पण इण बगत थांनै सुई ई कठै सूं मिलसी। इंया करो कै थे सरकारी अस्पताळ ई लेय जावो। थांरी तो सरकारी अस्पताळ मांय ई घणी जाण-पिछाण है।

डागदर सूं बात कर्‌यां पछै बीं रै दूजी दोघड़चिंता होयगी। इत्ती रात में इण हालत मांय अस्पताळ कियां पूगै? बो बेटै सूं बतळायो कै इण हालत मांय मोटरसाइकल माथै तो आ चाल कोनी सकै, किणी टेम्पू आळै नैं बुलावणो पड़सी। बेटो झट सूं कैयो कै सुनील भायै नै फोन करूं, अबार आय जासी। सुनील रो घर चिपतो ई हो, पण रात री अेक बज्यां कांई ठाह बो फोन सुणै कै नीं? बीं रै थ्यावस कठै? घरआळी नै तर-तर निढाळ होवती देख'र बीं रो रूं-रूं कांपै हो। मन ई मन बो कोरोना नैं गाळ्यां काढतो सरकारी अस्पताळ रै कंपाउंडर भायलै नैं फोन करण री सोची। मन मांय अेक झिझक ई आई कै बिच्यारो सारै दिन कोरोना वॉरियर बण्योड़ो ड्यूटी करी है, अबै आधी रात रा बीं री नींद खराब करणी माड़ी बात है, पण जद जीव रै घ्यारी मच्योड़ी है, तद कांई करै! मन मांय बिच्यारां रा गोट उठै कै कांई ठाह फोन उठायसी कै नीं, पण घणो सोचणै रो बगत किण कनै हो, बो झट फोन ठरका दियो। घंटी बाजतै ई फोन उठग्यो। बीं रै जीव मांय जीव आयो।

''हैलो,'' सुणतां ई बो फटाफट घरआळी री हालत बताई। कंपाउंडर कैयो कै कीं चिंता कोनी। अस्पताळ मांय डागदर अर कंपाउंडर दोवूं ई है। डागदर नीचै नीं मिलै तो ऊपर क्वाटर मांय मिलसी। थे भाभीजी नैं अस्पताळ लेय जावो अर कीं दिक्कत होवै तो म्हारै सूं बात करवा दिया।'' भायलै सूं इत्तो सुण'र बीं रै कीं धीजो बंध्यो। मन री कायरी नैं अळगी कर'र बो हुंस्यारी ल्यायो। इण बिचाळै बेटो ई सुनील नैं फोन कर दियो। सुनील ई जागग्यो, पण अजै ताणी आयो कोनी, कांई करै लाग्यो?

बेटो घर सूं बारै निकळै ई हो कै टेम्पू री आवाज सुणीजी। बो झट करतो बडै बेटै नै नीचै आवणै रो हेलो करयो अर आप-आपरै मूंढै माथै मास्क लगावणै री ताकीद करतो घरआळी नैं टेम्पू मांय बिठाई। बडै बेटै नै घर री भोळावण देय'र बै टेम्पू मांय बैठग्या। टेम्पू अस्पताळ कानी भागै हो अर बाप-बेटो दोवूं बीं नैं संभाळै हा। दूबळै रै दोय असाढ होवै। टेम्पू अजै अधबिचाळै ई हो कै पुलिस री गाडी साम्हीं मिलगी। बै आपरी गाडी टेम्पू रै साम्हीं खड़ी कर दी।

''स्साळा नैं अबै ई मरणो हो, आं रै हियै री फूट्योड़ी है कांई? आधी रात नैं कोई तफरी करण नै जावै कांई, गाडी न्यारी सामै खड़ी करी है।'' बो मन ई मन गाळ्यां काढतो बड़बड़ायो। छोटियो बेटो टेम्पू सूं बारै उतरै ई हो कै सुनील टोक्यो, ''कांई करै, थूं मत उतर, अबार लट्ठ सरकाय देवैला। पुलिसआळा टेम्पू कानी जोवै ई हा कै घरआळी नैं जोर सूं होबरड़ो आयो। पुलिसआळां री निजरां बीं माथै पड़तां ई बै हाथ सूं जावण रो इसारो करता आपरी गाडी आगै करली।

टेम्पू जियां ई अस्पताळ मांय पूग्यो, बो झट करतो ड्यूटी-रूम कानी गयो। बठै कंपाउंडर बैठ्यो हो, बो बीं सूं डागदर रो पूछ्यो, जद बो पेड़्यां कानी इसारो कर दियो। बा ` सीधो पेड़्यां चढग्यो। छात माथै दोय क्वाटर हा जिण मांय सूं अेक क्वाटर मांय डागदर जागतो हो, बीं कनै अेक रोगी आयोड़ो हो जिणनैं बो देखै हो। जित्तै डागदर बीं रोगी नैं देख्यो, बो चुपचाप अळगो खड़्यो रैयो। बीं रोगी नैं देख्यां पछै बो झट करतो डागदर कनै गयो। औ डागदर बीं री जाण रो नीं हो, इण खातर बो पैलां आपरो परिचै दियो अर पछै आपरी जोड़ायत नैं देखण खातर कैयो।

''नीचै ड्यूटी माथै डागदर है, बै थांरै ई समाज रा है, बांनैं दिखा लेवो।'' डागदर बीं नैं उथळो दियो अर क्वाटर रो किंवाड़ बंद कर लियो।

बो बां ई पगां नीचै आयग्यो। अबै ड्यूटी आळै डागदर नै ढूंढणो हो, अेकर तो बो तकायो कै कुण-सै रूम मांय होयसी, पण पछै सूझ्यै नांव सूं बूझ्यो भलो लाग्यो।

''ड्यूटी डागदर किण रूम मांय है?'' बो सीधो कंपाउंडर नैं जाय'र पूछ्यो।

''रूम नंबर नव।'' कंपाउंडर उथळो दियो। बो कमरां रा नंबर देखतो नव नम्बर मांय झांक्यो। बठै सुसियै रो तीजो पग ई नीं हो। बो समझग्यो कै अठै कोई नीं है। पण ऊपर आळो डागदर बींनैं टरकायो क्यूं! स्यात परिचै री गड़बड़ होयगी। डागदर नैं बीं सूं फीस मिलण री आस तूटगी होवैली, नींतर बो तो त्यार ई बैठ्यो हो, बीं नैं किसा औजार सांभणा हा, पण अबै कांई होवै। बेटो अर सुनील बींनैं अस्पताळ मांय ई बेंच माथै सुवाय दी ही। बै दोवूं कनैआय'र पूछ्यो कै कांई होयो?

''थे इणनैं ऊपर ल्यावो।'' कैवतो बो भळै ऊपर भाग्यो। डागदर रै क्वाटर री बत्ती बुझगी ही। बो घंटी बजा दी। डागदर सोवण ढूक्यो ई हो। पाछो उठ'र बत्ती जगा'र आडो खोल्यो।

''डागदर साब, थे ई देखो, नीचै डागदर नीं है।''

''ठीक है, ल्यावो।'' कैय'र डागदर आपरी कुरसी माथै बैठग्यो। इत्ती देर मांय बेटो अर सुनील बींनैं लेय आया।

''कांई होयो मा'जी?'' डागदर बीं री हालत देख'र पूछ्यो।

''डागदर साब, आ बी.पी. री रोगी है। हरमेस जोसीजी री दवाई चालै। इयांकली हालत होयां बै सुई लगाया करै।''

डागदर बी.पी. नापै लाग्यो। बी.पी. तो ठीक ई ही, पण ऊबाक-होबरड़ा अर चक्कर रा लखण देख'र डागदर बोल्यो कै डी-हाईडरेसन है। चावो तो गुलकोज चढवा लेवो। नींतर अै दोय इंजेक्सन लिख्या है जिका लगवा लेवो। आराम नीं आवै तो दिनूगै फेरूं दिखा लिया।

बो डागदर रो रुक्को लेय'र डागदर री फीस रा सौ रुपिया पकड़ाया अर ड्यूटी रूम कानी चाल पड़्यो। बेटो अर सुनील बीं नैं नीचै ल्याया इत्तै मांय कंपाउंडर रुक्कै मुजब इंजेक्सन त्यार कर राख्यो हो। बां रै आवता ई बण कैयो कै बारै तो च्यानणो कम है, इणां नैं वारड मांय लेय चालो।

सुनील अर बेटो बीं नैं वारड मांय लेयग्या। बो बारै ई खड़्यो रैयो। सुई लगायां पछै कंपाउंडर हाथ धोवण नैं गयो जद छोटियो बेटो बोल्यो कै बापू कंपाउंडर कैयो है कै म्हारी मैणत रा कीं देया।

बीं नैं इचरज होयो। आ कांई बात होयी, आ तो गड़बड़ है। ड्यूटी माथै होय'र क्यां रो मैणतानो? अेकर तो बीं रै मन मांय आई कै आपरै भायलै नैं फोन करै, पण हाथूं-हाथ बिच्यार बदळग्या। बापड़ो बिना किणी हील-हुज्जत आपणो काम कर्‌यो है। नींतर सौ नखरा कर सकै हो। बिना ड्यूटी रो डागदर देख्यो है, बीं रुक्कै माथै इंजेक्सन लगावणै सूं नट सकै हो।

''ठीक है, थूं ई देय दै।'' बो पचास रिपिया निकाळ'र बीं नैं दिया अर टेम्पू सूं पाछा घरां आय'र घरआळी नैं बेड माथै सुवाण दी। सुई री गेळ सूं बींनैं नींद आयगी ही। सुनील जावण लाग्यो जद बो आपरै बेटै नैं कैयो कै सुनील नै कीं सावळ चुकाई। इत्ती रात मांय भाग्यो आयो, गाडी रो तेल ई बळ्यो है। चायै कित्तो ई अबखो बगत होवै, अैड़ी चुकारी मांय कीं गड़बड़ नीं करणी। सौ री ठौड़ दोय सौ देवणा चोखा।

''भाईजी तो घर रा ई है, दिनूगै देय देस्यां।'' कैय'र छोटो बेटो आपरै कमरै मांय बड़ग्यो।

बो ई बेड माथै आडो होयग्यो, पण नींद नीं आवै ही। बींनैं लागै हो कै कीं गड़बड़ तो है।

◆◆

राजेन्द्र जोशी

ऊजळी गंगा : मैली गंगा

''गंगा खातर अबै तो छोरो देखणो चाईजै। अबै आ बरस सत्ताईस री हुयगी है अर काल ई इणरी बरसगांठ है। कितरा ई छोरा रा मांगा आवै, पण थे बाप-बेटी तो कान ई कोनी ढेरो! बस, थांरै तो अेक ईज रट लगायोड़ी है कै इणरै मन माफिक छोरो हुवणो चाईजै। नौकरी लाग्योड़ै छोरै रो रिश्तो आयोड़ो है, और थांनै कांई चाईजै ? कमावतो-खावतो वर अर सुखी-सोरो घर। म्हारी भोजाई तो बापड़ी नित नौरा काढै। म्हारी भोजाई रै सागी मामै रो बेटो है अर उणनैं गंगा पसंद आयोड़ी है। स्कूल-कॉलेज में ई भेळा पढ्योड़ा है। दोनूं अेक-दूजै नैं आछी तरै जाणै। घर-घराणो ई चोखो है, सगळा टाबरां रै पैली सूं ई न्यारा-न्यारा घर बणायोड़ा है। उणां रै घर में कोई चीज-बस्त री कमी नीं है। सगपण तो करणो ईज है। छोरी कदैई घर में नीं रैवै। बा तो आपरै सासरै ई जावैली।'' गंगा री मां आपरै घरधणी सूं कैयो।

उतावळी हुवती बा फेरूं कैवण लागी, ''पैली आ गंगा कैवती कै अबार म्हनैं पढण दो, पछै कैवण लागी कै नौकरी लागण दो अर अबै सगळी बातां हुयगी जणै बेटी रै बाप रो नाक तीसरै आसमान। थांरी तो आंख्यां ई कोनी खुलै। म्हैं थांनै भळै कैवूं, आजकाल री टेम ठीक नीं है, थांनै कांई ठाह पड़ै। दिनभर घर में म्हैं रैवूं। थे तो ऑफिस जावो अर छुट्टी आळै दिन घर में टिको ई कोनी। लोग बातां बणावै कै गंगा रा मां-बाप तो बेटी नैं

तपसी भवन, ब्रह्म-बगीचा, नत्थूसर बास, बीकानेर (राज.) मो. 9829032181

 ISSN : 2320-0995

घर में ई राखता लाग्या। बेटी अबै कमावती हुयगी। बैठ्या बेटी री कमाई खावै।'' गंगा री मां आपरो पूरो आफरो झाड़्यो।

''देख गंगा री मां, लोगां री बातां सूं म्हनैं कीं लेणो-देणो नीं है। म्हारी बेटी कठैई मांगण नै नीं जावै। पढाय-लिखाय'र मोटी दोरी घणी करी है। छोरो गंगा सूं बेसी कमावण वाळो मिलणो चाईजै अर कीं तो गंगा रै स्टैंडर्ड रो हुवणो चाईजै। थूं क्यूं फिकर करै, गंगा खाली थारी अेकली री बेटी तो है कोनी, म्हारी भी बेटी है। थूं कांई सोचै, म्हनैं इणरी चिंता कोनी अर पछै गंगा री भी तो हामळ जरूरी है।'' रामप्रसाद गंगा री मां नैं समझायी।

''औ ल्यो, भुआजी रो फोन है। बात करो।''

''कांई सल्ला है रामप्रसाद, तबीयत कीकर है, टाबर कियां है? गंगा रा कांई हालचाल है? रामप्रसाद, अबै गंगा रा हाथ पीळा करणा कोनी कांई? इणनैं कांई बूढी कर'र परणासी, बेटी रा बाप!''

''आ कांई बात करी भुआजी, गंगा री पढाई पूरी हुयी है अर अबार ई नौकरी लागी है। थांरै ध्यान में कोई चोखो छोरो हुवै तो बतावो।''

भुआजी टाबर बतावण रो कैय'र फोन राख दियो। भुआजी रै फोन राखतां ई गंगा री मां फेरूं कैवण लागी, ''म्हनैं पतियारो नीं है कै गंगा रो सगपण इण स्हैर में ईज करणो है। छोरी री मां रो मन नीं भरीजै। देखो गंगा रा पापा, म्हारी मानो जणै तो अठैई कोई छोरो देखलो। अै विदेसां रा चक्कर ठीक नीं है, म्हारो मन नीं मानै।''

रामप्रसाद पड़ूत्तर दियो, ''थां लुगाइयां री समझ तो फळसै तांई री रैवैला। पण परिवार री प्रगति बारै जायां ई हुया करै। थूं कांई जाणै, विदेसां मांय आपणै देस रा लोग नीं रैवै! भर्‌या पड़्या है भारत रा लोग। बारै जावैला, तो समाज मांय इमेज बणैला, इज्जत बधैला। म्हारै तो आ समझ नीं आवै कै थनैं डर क्यांरो है?''

सगळा लोग राजी हुया। गंगा पैरिस जावैली। भुआजी रै नणद रो बेटो पैरिस मांय लारलै केई बरसां सूं नौकरी करै हो अर भुआजी गंगा खातर केई दिनां सूं दबाव बणयोड़ो हो। बो भुआजी रै मूंडै लाग्योड़ो हो। बो जद कदैई भारत आवतो, आपरै घरै नीं जाय'र भुआजी रै अठै ई ढूकतो।

इणसूं पैली जित्ता ई सगपण आया, सगळां नैं गंगा मना करती रैयी। गंगा री मां भुआजी नैं हां नीं भरी, पण गंगा अर उण रा बापू नैं पैरिस रा लटका-झटका अर भुआजी री बातां मांय दम लाग्यो।

''गंगा री मां, अबै घणी टेम नीं है। सगळी त्यारी करणी बाकी है।'' रामप्रसाद हरखतो कैवण लाग्यो।

गंगा री मां पडूत्तर देंवती बोली, ''सुमेर रै मां-बाप अर सुमेर सूं आप खुद सीधी बात करो। बरात री टेम, तारीख, कित्ता मिनख आवैला, लेण-देण री बात तो करणी ई है।''

''गंगा री मां, थूं बिल्कुल चिंता-फिकर मत कर, भुआजी कैवता हा कै बांनै कीं नीं चाईजै। बांनै तो थांरी फूटरी-फर्री गंगा चाईजै।''

''बा बात तो ठीक है, पण थे बाप-बेटी म्हारी बात भी तो सुणो!'' कैवती-कैवती गंगा री मां सोच में पड़गी। मन उदास हो। मन में विचारां रा गोट उठै। बेटी पैरिस मांय कियां रैवैली? आ पढ-लिख'र नौकरी भलांई लागगी, पण मन री भोळी है, हरेक माथै भरोसो कर लेवै। उण पराई भोम माथै आपरो आदमी कुण है, जिको इणनैं संभाळसी! म्हारी गंगा तो कदेई चूल्है-चौकै रै नैड़ी ई नीं गई, कियां पार पड़सी?

''गंगा री मां, बधाई हुवै।'' पाड़ोसी बधाई देवण नै आया तो गंगा री मां रै विचारां री लड़ियां टूटी। बा संभळ'र बैठी।

''देखो गंगा री मां, गंगा पैरिस जावै, आ तो बधाई री बात है, पण पंजाब कानी रा किस्सा रोज अखबारां मांय छपै। आप आछी तरै देखभाळ करी हुवोला। पण अेक बात म्हारी मान लीजो कै गंगा नैं नौकरी मत छुडाया। पैरिस मांय ई आ नौकरी हुय सकै। खैर, जठै जोग हुवै बियां ई हुवै, आपणी गळी री छोरी पैरिस जासी, म्हांनै तो इण बात री ई खुसी है। जठै अंजळ-पाणी हुवै, बठै जावणो ई पड़ै। जोड़ा तो ठाकुर जी ऊपर सूं बणाय'र भेजै।'' पाड़ोसी थावस बंधायो।

गंगा री मां कैवण लागी, ''आपनैं कांई बताऊं। लारलै चार-पांच बरसां सूं गंगा रै बापू रै मुंहबोली भुआ है, बा नितूगै दबाव देंवती। आं रै जचगी। हालतांई तो छोरै सूं मिल्या ई कोनी। गंगा वीडियो कॉलिंग सूं बात जरूर करी है। अबै सगळो दारमदार भुआजी माथै ईज है। सबसूं बडी बात आ है कै म्हारी बिरादरी रो ई छोरो मिल्यो है। आप सगळां नैं आवणो है ब्यांव मांय।''

''गंगा रा पापा, अबै ऑफिस जावणो बंद करो अर आज ई छुट्टी री अरज कर दो, ब्यांव रा काम करणा पड़्या है।''

गंगा रा पापा रामप्रसाद जी कैवण लाग्या, ''थूं भी तो अबै थारै खातर त्यारी सरू कर दे कनी, थनैं भी तो छुट्टी कियां मिलैली, बात कर थारै दफ्तर मांय।

गंगा ब्यांव तो करणी चावै, पण मन मांय ब्यांव नैं लेय'र जिको हरख हुवणो चाईजै, बा खुसी हालतांई नीं आयी है। पैरिस जावणो कियां हुवैलो! इतरा बरसां सूं छोरो

पैरिस मांय कियां रैवै, कीं समझ नीं आवै। अठै हुवतो तो बातचीत हुवती। अेक-दूजै नैं समझण री हूंस बधती। फोन माथै आदमी री पिछाण कियां हुय सकै। बियां तो पापाजी री भुआ बतायो है तो बै गळत थोड़ी ई बतावैला।

इण बिचाळै सोमनाथ रा मां-बाऊजी अर बैन भी आया। लागता तो ठीक ई हा। सोमनाथ रै भाई रो फोन रोजीना आवै। उणरी बातां ठीक नीं लखावै। ठीक है, देवर-भोजाई मजाक करै, पण दो दिन तांई अेकलो आयो। गंगा नैं देवर रो वैवार कीं ठीक नीं लाग्यो। पैली बात तो बो म्हारै ब्यांव सूं पैली आयो ई क्यूं? पापा रा भुआजी सोमनाथ कनै अेकली पैरिस गयोड़ी ही, होय सकै घर जमावण नैं गई हुवैली।

''अरे कठै उळझगी गंगा, इयां-कियां? आज थनैं त्यार कोनी हुवणो कांई, दफ्तर कोनी जावणो?'' मां घर रो काम निवेड़ती गंगा नैं बतळायी।

''नीं मां, अैड़ी कोई जल्दी नीं है। आज दूजो शनिवार है, म्हारै ऑफिस री छुट्टी है।'' गंगा फेरूं पैरिस रा मनोरम दरसाव लेपटाप माथै देख'र मन रा लाडू खावण लागी। पैरिस रो रईसी रहण-सहण। पळपळाट करतो स्हैर।

दो गाडियां भरीज'र बरात अेन मौकै पूगी। रातोंरात बरात री रवानगी। गंगा इणसूं पैली पंजाब कदैई नीं गई ही। गंगा अर सोमनाथ अेक-दो दिन घुमा-फिरी करी, पण भुआजी अर सोमनाथ रो भाई हमेस सागै रैवता। आ बात गंगा रै कम जचती। सोमनाथ नैं गंगा इसारो कर्‌यो, पण सोमनाथ ई कोई सावळसर उथळो नीं दियो।

''देख गंगा, थनैं पैरिस सागै चालणो है तो किरायै-भाड़ै रो जुगाड़ करणो पड़सी। थारै खुद रो बैंक बेलेंस तो हुवैला ईज। इयां थूं खुद लारलै दो बरस सूं नौकरी तो करै ईज है।'' सुसरो जी कैवण लाग्या, ''हां, अेक बात और है कै पैरिस जावण सूं पैली थारै नांव रो कोई प्लाट, घर, गाडी हुवै तो उणनैं भी बीजै नांव सूं करणो पड़ैला। देख गंगा, घर री बात घर में ईज रैवणी चाईजै।''

गंगा ऊंडै सोच मांय डूबगी। पण अेकै कानी ब्यांव रो हरख अर दूजै कानी पैरिस जावण रो कोड। पछै बा आ बात आछी तरै जाणती ही कै अबै तो औ ईज म्हारो घर है। म्हनैं तो उमर भर इणीज घर मांय रैवणो है। म्हारै कनै जको है बो सोमनाथ रो अर सोमनाथ कनै जको ई बो म्हारो।

ब्यांव पछै सोमनाथ रा भायला अर छोटो भाई घर मांय खूब उछळ-कूद करता। मैफिल जमती। आवण-जावण वाळा सगळा थुथको न्हाखता अर कैवता कै भठिंडा मांय अैड़ी पर्सनलिटी किणी बीनणी री नीं है। गंगा री खूब तारीफ हुवती पण बा इण बात सूं

अणजाण ही कै इतरा मसका क्यूं लाग रैया है। इण स्हैर मांय तो म्हारै सूं फूठरी घणी ई छोर्‍यां है। पंजाबी कुड़्यां तो बियां ई मस्त हुया करै है।

''गंगा, अबै थूं तो सासरै आयगी अर जमगी। म्हारै घर छोड्यां नैं घणा दिन हुयग्या है। म्हनैं अबोहर जावणो पड़सी।'' भुआजी कैवण लाग्या, ''सोमनाथ, म्हनैं छोडण नैं चाल भाई!''

आज चार-पांच दिन हुयग्या है सोमनाथ नैं गयां नै, पण हालतांई पाछो नीं आयो अर बात करतां ई कैवै कै कोई जरूरी काम है, टेम लागसी।

''हां मम्मी, आप कियां हो?'' गंगा बाथरूम में जाय'र मोबाईल पर बात करी, ''मम्मी, म्हनैं अठै रो ढंगढाळो कीं ठीक नीं लागै।''

''क्यूं बेटी, इसी कांई बात है, थूं ठीक तो है नीं... ?''

''मम्मी, थे म्हारी बात सुणो...!''

''अरे बेटी, थूं इत्ती धीमै क्यूं बोलै है, थारी तबीयत तो ठीक है नीं... ?''

''म्हारी तबीयत तो ठीक है मम्मी, पण म्हैं बाथरूम में हूं। कोई सुणै नीं, इण खातर धीरै बोलूं हूं। मम्मी, सोमनाथ तो भुआजी नैं अबोहर छोडण नै गया हा चार-पांच दिन पैली, पण हालतांई पाछा नीं आया। लारै म्हारो देवर अर उणरा दो-तीन भायला रोजीना घर में उधम घालै अर म्हनैं गळत नजर सूं देखै। देवर तो अेक दिन अठै तांई कैय दियो कै म्हारै मांय अर सोमनाथ में कीं फरक नीं है। भाई नीं हुवै तो म्हनैं ई सोमनाथ समझो।''

''तो आ बात थूं थारै सासू-सुसरै नैं क्यूं नीं बतावै?''

''बांनै कांई बताऊं मम्मी, म्हनैं तो लागै बांरी सै है। अबार तो म्हैं फोन राखूं मम्मी, सायद कोई आवै है, पछै बात करूंली।''

''आप आयग्या, दिन घणा लगाया नीं, भुआजी लाड घणा लडाया लागै।''

''हां लडाया, बोल!'' सोमनाथ आकळ-बाकळ हुवतो कैवण लाग्यो, ''बा हुवैली थारै बाप री अर थारी, म्हारी तो बा सौ-कीं है। थनैं दोरी क्यूं लागै है? थारै खातर कोई कमी हुवै तो बता?''

''अरे गंगा, म्हारी प्यारी गंगा। काल म्हैं थनैं रीसां बळतो कीं ऊंच-नीच कैय दियो हो, म्हनैं माफ करजै।'' सोमनाथ लाड जतावतो बोल्यो, ''काल म्हारो मूड खराब हो। अबोहर मांय आपणो कारखानो चालै हो, उणमें पचास लाख रो घाटो हुयग्यो। अेक हिस्सेदार हो, जको म्हनैं डळी देय भाग्यो। थूं बिराजी मत हुयै।''

गंगा कैवण लागी, ''म्हनैं बतावणो चाईजै नीं, म्हैं थांरी जोड़ायत हूं। म्हैं अेक बात थांनै साफ-साफ बताय दूं, पैली थांरै इण बींरै नैं मनावो, इणरो बरताव म्हारै पेटै ठीक

नीं है। उण रा भायला ई कीं कमतर नीं है। थांनै भी अबै इत्ता-इत्ता दिन म्हनैं अेकली नैं छोड'र नीं जावणो चाईजै।''

''थूं चिंता ई मत कर, म्हैं उणरी अर उणरै भायलां री खबर लेय लेस्यूं। पण गंगा अबै थूं ईज म्हारी इण परेशानी मांय कीं मदद कर सकै।''

''इणमें म्हैं आपरी भलां कांई मदद कर सकूं। म्हनैं तो हाल तांई कोई बात री ठाह ई कोनी।''

''अरे गंगा, इणमें बतावण री कांई बात है। बात सीधी है, पचास लाख रो घाटो लाग्यो है, पण अेकर चाळीस लाख री व्यवस्था तो तुरंत करणी पड़सी। थूं चावै तो कर सकै। बीकानेर में अेक प्लाट थारै नांव रो है नीं, अेकर उणनैं बेच देवां। उणनैं बेच्यां इतरी रकम तो मिल सकै, थोड़ो-घणो बैंक बेलेंस ई हुवैला थारो।''

गंगा रै इण घर री कोई बात समझ में नीं आवै। औ घर है कै कोई बजराक! उदास हुवती गंगा कैवण लागी, ''बीकानेर वाळो प्लाट तो म्हारी मम्मी अर म्हारै दोनूं रै नांव सूं है। म्हारो अेकली रो हुवतो तो अलग बात ही।''

''अरे तो इणमें सोचण री कांई बात है। मम्मीजी सूं काल ई बात कर लेसां। आपां दोनूं काल ई बीकानेर चालसां।''

बीकानेर रो नांव सुणतां ई गंगा बारै कानी निसरगी। बा फेरूं बाथरूम में जाय'र मम्मी नैं मोबाईल लगायो, ''मम्मी, हुय सकै म्हैं अर सोमनाथ काल बीकानेर आ रैया हां, आप सुणो हो नीं मम्मी...''

''हैलो, हां गंगा म्हनैं सुणीजै है, बोल बेटी, कियां आवो हो?''

''मम्मी, म्हैं सगळी बात थनै बठै आय'र ई बतासूं। म्हनैं अठै री हवा ठीक नीं लखावै।''

गंगा आपरी त्यारी कर ली ही।

बीकानेर पूगतां ई सोमनाथ कैवण लाग्यो, ''गंगा, बधाई है, म्हारी कंपनी पैरिस मांय थनैं ई नौकरी रो प्रस्ताव दियो है अर पैकेज ई म्हारै बरोबर मिलसी। औ देख, मेल आयो है।''

मोबाईल माथै ई-मेल देखतां ई गंगा लारली सगळी बातां भूलगी। कांई करणो है इण रांडीरोळै रो म्हनैं, पैरिस गियां पछै म्हैं अर सोमनाथ ईज हां। बठै कुण दूजो बिचाळै आवैला। खुसी सूं आंख्यां भरीजगी गंगा री।

सोमनाथ गंगा नैं कस'र पकड़ली अर लाड लडावतो बोल्यो, ''गंगा, अबै बेगी त्यार हुयजा, थारै दफ्तर मांय चाल'र नौकरी सूं इस्तीफो दियां पछै उण प्लाट नैं भी बेचणो पड़सी। भळै ई थारै नांव री कोई प्रॉपर्टी हुवै तो देख लियै। पैरिस गयां पछै बेगो-सो पाछो आवणो दोरो है।

गंगा री मम्मी खुद नौकरी करै। नौकरी करण सूं ई बा गंगा नैं पढाई-लिखाई। उणनैं नौकरी लगाई। बेटै नैं पढायो। नौकरी छोटी हुवो चायै बडी, सरकार री नौकरी तो नौकरी ई हुया करै। नौकरी छोडण री बात सुणतां ई गंगा री मम्मी अणमणी हुयगी। बा प्लाट नीं बेचण री बात माथै अड़गी।

प्लाट तो नीं बिक्यो, पण गंगा सोमनाथ कनै पैरिस सूं आयोड़ो ई-मेल पढ'र गच्चागोळी खायगी। बा हरखीजती थकी आपरी नौकरी सूं इस्तीफो देय दियो। उण रा जका ई जमा रुपिया हा बै निकळवा'र सोमनाथ हड़प लिया।

''हां मैडम जी, म्हारी टिगट बणगी है।''

''पण कठैई उण गंगली नैं तो सागै नीं लावैला?''

''कांई बात करो हो मैडम जी, उणनैं अबै कुण कुत्तोजी पूछैला। अबै तो थूं ईज म्हारी गंगा हुवैला।''

भटिंडा पूगतां ई अबकै सगळां रो बरताव अेकदम न्यारो हो। सगळो घर भर गंगा री सेवा मांय लागग्यो। सासू-सुसरो, देवर अर सोमनाथ। अेक महीनो हुयग्यो, सोमनाथ खूब घुमावतो। गंगा ई घणी राजी ही।

गंगा आपरी मम्मी अर पापा सूं रोजीना फोन माथै बातां करती, ''मम्मी, अबै सोकीं ठीक लखावै, थूं बिल्कुल चिंता-फिकर मत करचै, म्हैं अठै खूब मस्त हूं।''

''पेरिस कद तांई जावोला?''

''मम्मी, हाल तांई म्हारो पासपोर्ट कोनी बण्यो।''

''क्यूं कांई बात हुयगी?''

''थोड़ो टेम लागसी मम्मी, पासपोर्ट मांय ब्यांव री अेंट्री हुवणी है। देखो, म्हारो पासपोर्ट बणतां ई जावणो है। मम्मीजी, इयां तो सोमनाथ री कंपनी सूं रोजीना फोन आवै, बेगो बुलावै। ठीक है मम्मीजी, भळै बात करूंली।''

गंगा बडी मुसीबत है। अेक हफ्तै में नौकरी ज्वाइन करणी पड़ैला। औ देख, कंपनी रो ई-मेल!'' सोमनाथ आपरो ई-मेल गंगा नैं पढावण लाग्यो।

गंगा कैवण लागी, ''पाछो मेल कर दो। थोड़ो बगत और लेवो, म्हारै पासपोर्ट री बात लिख दो।''

सोमनाथ बोलै हो अर गंगा सोमनाथ रै ई-मेल माथै टाइप कर दीनो।

थोड़ी देर में पड्डत्तर आयो, ''टेम तो नीं मिल सकै।''

सोमनाथ अर गंगा पासपोर्ट रै दफ्तर जाय'र पासपोर्ट बेगो बणावण री अरज करी, पण उणां अेक महीनै री टेम घाल दी।

सोमनाथ अेकर पाछो आवण रो कैय'र पैरिस पूगग्यो। कीं दिनां तांई फोन माथै मीठी-मीठी बातां हुवती।

अेक दिन गंगा सासू नैं पेरिस रा फोटू दिखाया अेक छोरी सागै।

''औ कांई सासूजी?'' गंगा अचंभो करती पूछ्यो।

सासू गंगा नैं फटकारती बोली, ''कांई हुयग्यो! थूं किसी दूजै छोरां सागै घूमती-फिरती नीं ही कांई थारै दफ्तर मांय?''

बात आगै बधती गयी अर सगळा घरआळां रो वैवार पाछो बदळग्यो।

गंगा सोमनाथ नैं फोन कर्‌यो अर ओळभो दीनो। सोमनाथ कैवण लाग्यो, ''थारा सगळा कच्चा चिट्ठा म्हनैं ठा पड़ग्या। थूं नांव री गंगा है।''

गंगा रोवती-रोवती कैवण लागी, ''आप आज इयां-कियां बात करो हो?''

सोमनाथ पड़ूत्तर देंवतो बोल्यो, ''थूं पेरिस आवण लायक नीं है। सुपना देख पेरिस रा। थारै बठै घणाई है। म्हारी कांई जरूरत है?

गंगा नै चक्कर आवण लागग्या। गंगा तो थमगी ही।

इण पवित्र देस री अेक और गंगा पैरिस री पळपळाट मांय आपरी चमक आपरै हाथां उतार लीन्ही।

◆◆

श्याम महर्षि

गजानन वर्मा रै गीतां री घमक

मन री सैं सूं सरल अर मार्मिक अभिव्यक्ति रो माध्यम है—गीत। सुख अर आनंद ई नीं, मन मांय उमेटै रो असंतोष अर दुख री तड़फ भी गीत सूं सहारो लेय'र आपरै मन री पीड़ व्यक्त कर सकै है। कवि गीत रै माध्यम सूं श्रोता नैं भी प्रभावित करै।

जीवण री सगळी सक्रियता रै लारै गीतां री प्रेरणा हुवै। हळ चलावतां, निनाण करतां, सड़क री माटी खोदतां, भारो ढोवतां मजदूर, पणघट सूं पाणी ल्यावती, चाकी पीसती, भातो ल्यावती बीनण्यां कै छोरयां, कैवणै रो अरथाव औ कै जिंदगाणी री सगळी व्यवस्था गीतां री धुन माथै चालै। भाव अर सैली पक्ष काव्य री कसौटी रा दो आधार मान्या गया है। गीतां रै बोल सूं अणजाण हुवता थकां भी आपां केई बार उणरै सुर सूं आ जाण सकां कै गीत में कित्तो आनंद अथवा दरद है।

राजस्थानी लोक संगीत आपणै समाज में पुराणा संस्कारां री धरोहर है। औ ईज कारण है कै आपां उणनैं हियै-तणी अपणायत देवां हां। म्हारो कैवणो है कै लोक वातावरण रो साचो चितराम गजानन वर्मा रै गीतां में मिलै, आ उणां रै काव्य सिरजण री मोटी खासियत है। गजानन वर्मा कवि अर गीतकार है। बै लोकचेतना री हरेक हलचल रै साथै सक्रिय है। उणां रै गीतां में काळजै में ऊंडै तांई पूगणै री खिमता है। बै आपरै गीतां मांय चायै कित्ती ई ऊंचाई तांई उडाण भरै, पण बै धरती री सुगंध सूं अळगा

महर्षि प्रिंटर्स, पंचायत समिति रै साम्हीं, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राज. मो. 9414416274

 ISSN : 2320-0995

नीं हुवै। बै प्रकृति रै चितराम नैं भी आपरै संचै ढाळता जावै। हरियल खेतां रै सौंदर्य नैं निहारता थकां बै आपरी रचना नैं मैणत रै पसीनै सूं हळाडोब हुय'र रचै। वर्मा आपरै गीतां में जको भी गायो है बो सत्यं सुंदरम् अर्थात अचरज रै साथै पीड़ादायक है, पण है जथारथ।

लोकगीतां सूं प्रेरणा लेय'र गजानन वर्मा कवि-सम्मेलन रै मंच माथै घणी सफळता हासिल करी। जदपि गजानन वर्मा री पैली कृति राजस्थानी भासा री नीं हुय'र हिंदी में 'स्पंदन' ही। इण पोथी री घणकरी रचनावां प्रेम अर रोमांस री ही। उणां रै इण संग्रै सूं उण टैम री हिंदी कविता री नूंवी ओळखाण रो ठाह नीं पड़ै। उणां री कवितावां रो उठाव सीधो लोकगीतां री मनोभोम सूं हुयो। गजानन वर्मा आपरै गीतां में लोकगीतां री सबदावळी अर मोटिफ्स रै सागै लय अर संगीत नैं ई सागै लेवणै री खेचळ करी है। वर्मा इण सारू गावणै री अेक प्रक्रिया नैं लेय'र कवि-सम्मेलन माथै पूग्या। औ ईज कारण है कै वर्मा री कविता री बणगट आपरै संगीताऊ सुभाव रै कारण अेकदम न्यारी-निरवाळी है। बांरी कविता रै छंदां रो प्रबंध, उणां रै गीतां में टेर री प्रवृत्ति, ओळ्यां माथै सारीजतो वजन अर काव्योक्तियां नैं अेक ई ओळी में कैवणै री आंट संगीताऊ अनुकरण सारू घणी माफिक लागै। लोकगीतां में काम आयोड़ी सबदावळी अर धुनां नैं इण भांत देख'र निरणै लेवणो खतरनाक हुवैला कै गजानन वर्मा लोकगीतां रा रचारा है, क्यूंकै लोकगीत अेक मिनख री रचना नीं हुवै। इण खातर लोकगीतां में अरथाऊ मरजादा अर काम आयोड़ा सबदां री खासियत अेकदम न्यारी है, पण वर्मा रै गीतां में उणरी न्यारी मठोठ है। औ कदैई संभव हुवैलो कै गजानन वर्मा रा गीत समाज में पाणी री भांत रळमिळ जावैला! गजानन वर्मा रै गीतां में जद आपां संगीत तत्त्व री बात करां तो उस्ताद रै संगीतात्मक प्रयोगां री चरचा करी जा सकै। उस्ताद री कविता सामूहिक गीतां खातर बंधी-बंधाई अर संयोजित साबित हुवै। पण गजानन वर्मा रै गीतां में लोकगीतां री ध्वन्यां री विसेसता लियां साच्यां ई आपरी विसय-वस्तुस्थिति रै कारणै समूह गीतां रै बजाय अेकल गीत ई सावळ सजता लागै। इण विसेसता नैं गजानन री खासियत मानी जा सकै।

गजानन वर्मा रै हरेक गीत रै अेक-दो पदां में हरमेस समाज री विसंगति माथै रीस भर्‌योड़ो हमलो हुवै। वर्मा सहज रूप सूं पारिवारिक चित्रण करता थकां समाज रै बीखै नैं उणीज रंग में वरणित कर अेक-दूजै अरथ नैं हासिल करणै री कोसिस करी है। औ उणां रो समाजू चेतना अर राजनीतिक विचारधारा रै बिचाळै अेक झीणो-सो फरक राखै, जको उणां रै गीतां में मजूर-किसान, लाल सूरज, ठगण आळा आद री बंतळ रै कारणै ई है। इण फरक रै कारणै ई बां रा गीत लोकगीतां सूं अलायदा लखावै।

गजानन वर्मा अेक इसा कवि है जका कविता अर संगीत दोनूं नैं सागै लेय'र चालै। उणां रा गीतां में संगीत री भी दखल रैवै। नूंवी चेतना री कविता लिखण वाळा

वर्मा सरुआत में आपरी पिछाण प्रगतिशील कवि रै रूप में बणाई। गजानन वर्मा सारू गणपतिचन्द भंडाणी लिखै कै मेघराज मुकुल रै बाद सै सूं घणा लोकप्रिय हुया गजानन वर्मा, जिका राजस्थानी मंच नैं लोकगीत री सैली सागै नूंवी चेतना रा गीत दिया, जिणमें केई तो ध्वनि गीत है। राजस्थानी मंच नैं आ देन गीतकार गजानन वर्मा री ई है। वर्मा रै सरुआत रा केई गीत मजदूर अर करसां रै जीवण रा चितराम है। उणां री सैली माथै उणां री ई मौलिक छाप है, उणां रै ध्वनि गीतां रो अनुकरण कर'र केई कवि कवितावां लिखी, पण बै गजानन वर्मा रै बरोबर नीं पूग सक्या।

आं सगळी बातां नैं बतावतां थकां इणमें कोई मीन-मेख नीं कै गजानन वर्मा राजस्थानी रा चावा-ठावा गीतकार है अर बै गीतकारां में आपरो स्थान ऊंचो राखै। बांरी 'धरती री धुन', 'सोनो निपजै रेत में', 'हळदी को रंग सुरंग' अर 'बारहमासा' नांव री काव्य कृतियां खास है।

मंच रा लोकप्रिय कवि वर्मा रा गीत जणै-जणै रै कंठां में रच्या-पच्या है। उणां रा गीत सरस अर भावपूर्ण है। वर्मा रा रच्योड़ा 'झांसी की राणी', 'धरती अब पसवाड़ो फेरै', 'धुण रै पिंजारा', 'मरवण चाल ए', 'सोवन थाळ' अर 'सुण दिखणादी बादळी' आद गीत आखै मुलक में खासा प्रसिद्ध हुया। वर्मा रै रचना संसार माथै कूंत रो कारज न रै समान हुयो है। गजानन वर्मा री रचनावां माथै कीं पारखी विद्वान कांई दीठ राखै, आ बात विचार करणै जोग है।

चावा-ठावा संपादक अर पारखी रावत सारस्वत री निजर में गजानन वर्मा राजस्थान रै मानखै नैं उणरै घर-आंगण, गांव-गवाड़ अर खेत-खळां रै घरू वातावरण में बिठा'र नूंवी विचार-क्रांति री किरणां सूं उणरै अंतर अर बाहर दोनूं नैं प्रतिबिंबित करयो है, आ उणां रै गीतां री खासियत है। उणां री गावणै री कळा गीतां नैं हाथां झाल'र राजस्थानी भासा रा कासीद बणा, देस में दूर तांई पूगा दिया।

'राजस्थानी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ रा लेखक बी.एल. माली 'अशांत' गजानन वर्मा री रचनावां मांय सूं अेक कृति 'सोनो निपजै रेत में' माथै आपरी टीप लिखै कै गजानन वर्मा री रचनावां में जठै चेतना रा सुर गूंजै है बठै ई बै सोवणा सांस्कृतिक लोकजीवण रा न्यारा-न्यारा चितराम भी पेश करया है। राजस्थान री धरती रा प्रतीकां रै ढाळै कवि सोसित अर सोसण करणियां नैं आपरी कवितावां में लिया है। उणां री रचना में प्रकृति वरणन घणो सरस अर मार्मिक है, बठै लोकजीवण रो सांतरो वरणन करीज्यो है। गजानन वर्मा री पोथ्यां में आ कृति श्रेष्ठ है।

मंच रा चावा कवि वर्मा रा गीत जण-जण रै कंठां रा हार बण'र लोकगीत बाजै लाग्या है। साच्यां ई लोकगीतां री ढाळां पर ई वर्मा आपरा गीत बणाया है। गीत कंवळा

अर भावपूरण है। वर्मा लोकजीवण रा चितराम बणावणै में भोत कारीगरी राखै। वर्मा री काव्य जात्रा में बदळाव आवता रैया है, जिणनैं तीन भागां में बांट्या जा सकै। पैलै भाग में गांव रै जीवण, खेत-खळां अर मजूर री कवितावां, दूजी शृंगार रस री कवितावां अर तीजै भाग में ब्यांव रा गीत।

वर्मा री कविता रो मोड़ अर तोड़ लोकगीतां में आय'र गुम जावै, केई वेळा तो ठाह ई कोनी पड़ै कै गजानन वर्मा सारू गीत पैलां है कै संगीत। पढां जणां अै दोनूं अेक दूसरै रा पूरक लागै। लोकगीतां री ढाळां माथै मीठा सरस गीत आपरै मिसरी जिसै गळै सूं कवि गाया तो राजस्थान में ई नीं, दिसावरां में भी चावा हुया।

नूंवी धुन, सबदां री नूंवी व्यंजना, मार्क्सवादी ललक, लोक सब्दावळी अर लोकगीतां रो आधार लेय'र अेक नूंवै जनवादी तेवर सागै वर्मा जकी कवितावां रची, बै सगळी री सगळी राजस्थानी कविता में आपरी ठावी ठौड़ बणायी है। गजानन वर्मा समकालीन कविता में सबळा कवि है।

गजानन वर्मा री पोथी 'सोनो निपजै रेत में' अर 'बारहमासा' माथै डॉ. श्याम शर्मा आपरी कृति 'राजस्थानी कविता अेक विस्लेसण' मांय वर्मा री रचना माथै लिखै कै गीतकार वर्मा बगत री घड़्यां रै साथै जिंदगाणी जद-जद पसवाड़ो फेरै जणां मजूरां नैं सावचेत करणै अर उणां नैं आपरी जिम्मेदारी रो अैसास कराणै री जरूरत समझै। डॉ. शर्मा गजानन वर्मा री रचना री आं ओळ्यां सूं रूबरू हुवै :

चेत बावळा! चोर लुटेरा लूटै है धन-धान रै
धरती अब पसवाड़ो फेरै, जाग मजूर किसान रै

ऊपरली ओळ्यां में कवि री चेतावणी रा सुर सुणीजै। कवि अठै कल्पना ई नीं करै बल्कै बो भावना सूं रूबरू हुवै। कवि रो आपरै बगत री स्थिति सूं असंतोस अर विद्रोह री भावना रचना में साफ दीखै। बो मिनख नैं ऊंचो उठावण री बात करै। मजूर री माड़ी हालत माथै कवि लिखै :

महलां में मतवाळा बैठ्या मौज करै
भूखां मरै मजूर कठै सूं पेट भरै

गजानन वर्मा आपरी रचना नैं प्रगतिशील सुर देय'र मिनखां नैं जगावै। 'बारहमासा' कृति जकी राजस्थानी रो रितु काव्य है, इण कृति में कवि बरस रा बारह महीनां माथै मन लगा'र वरणन कर्‌यो है। उणां रै इण काव्य में लुगाई रै मन रै वियोग री भावना में शृंगार रस री मूल भावना नैं बारह महीनां में न्यारा-न्यारा गीतां रो सिरजण कर'र व्यक्त करीजी है। किण भांत घरधिराणी रो मोट्यार चैत महीनै में घर सूं बहीर हुय'र नौकरी सारू दिसावर जावै अर इग्यारै महीना बीत्यां पछै बारवैं महीनै फागण में पाछो बावड़ै। कवि

सगळा गीतां में चैत सूं लेय'र माघ महीनै तांई वियोग रो अर फागण महीनै में संयोग श्रृंगार रो वरणन करयो है। कवि नैं ठेठ गांव रै हालात रो आछो-खासो अनुभव है। कवि घरधिराणी री मन री दसा माथै जको चितरण करयो है बो सरावण जोगो है। 'धरती री धुन' कृति माथै डॉ. शर्मा लिखै कै कवि वर्मा रा गीत भांत-भांत री राग-रागणी सूं भरपूर है। कवि रा गीत लोकगीतां री सैली माथै लिख्योड़ा है। इण में कवि नूंवै जुग रै मुजब राजस्थानी लोक-संस्कृति नैं नूंवो रूप-रंग अर ध्वनि दी है।

'राजस्थानी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' रा लेखक डॉ. गोरधनसिंह शेखावत लिखै कै गजानन वर्मा री रचनावां माथै लोकगीतां री संवेदणा अर लोकसंगीत रो घणो प्रभाव पड़्यो है, जिणरै कारण वर्मा रै गीतां रो घणो आकर्षण रैयो है। गांव री जिंदगाणी माथै मनभावणा प्रसंगां नैं उकेरणै में वर्मा नैं घणी योग्यता हासिल है। उणां री काव्यचेतना में केई पड़ाव है, पण मूळ में बै लोकजीवण रा मस्त अर खुसहाली रा चावा गीतकार है। आपरै ध्वनि गीतां रै माध्यम सूं बै मैणत-मजूरी सूं पेट भरण वाळै सर्वहारा वरग रो घणो सोवणो चित्रण करयो है।

'अलगोजो' रा संपादक श्रीमंत कुमार व्यास कवि गजानन वर्मा री रचनावां माथै आपरा विचार राखता थकां कैवै कै गजानन वर्मा राजस्थान री प्रकृति, हरिया-भरिया खेत, चौमासो, सावण, भादवो, हळ, करसा, धोरा, जीव-जिनावर, मिनख, मजूर सगळी कल्पना रै माध्यम सूं गीत अर संगीत रै साथै आपरी सबळी अर चावी रचना सूं प्रभावित करै। बै आगै कैवै कै वर्मा गीत गावै है, भुरकी नाखै है जको सुणणिया नीं थाकै, कवि भलांई थाकै। इण रो कारण औ है कै कवि री रचनावां अेक न्यारी दीठ देवै।

'आधुनिक राजस्थानी काव्य' रा संपादक रामेश्वरदयाल श्रीमाळी आपरै संपादकीय में लिख्यो है कै लोकगीतां री छिब रा आधुनिक गायक है गजानन वर्मा। वर्मा री कवितावां में लोकभावना आपरी पूरी धज रै साथै सोवै। गजानन वर्मा रा गीत फगत लोकगीतां री ढाळ माथै ई कोनी, लोकजीवण रा जीवंत अर सोवणा चितरामां सूं ई जुड़्या है। लोकधुन, लोकजीवण अर लोकराग गजानन रै गीतां री जबरी विसेसता है, पण गजानन जिसो पारिवारिक रिस्तां रै मोहक बंधण रो लेखक घणो चाल को सक्यो नीं। रामेश्वरदयाल श्रीमाळी गजानन वर्मा सारू ओळमो देवै कै वर्मा रो लेखन इतरो कम है कै बो देखाव में ई को आवै नीं। पण म्हैं इण कथन सूं सहमत नीं हूं। गजानन वर्मा रो लेखन रेंवतदान चारण सूं कमती नीं है। म्हारो तो औ कैवणो है कै संपादक उणरी कृति माथै कूंत करता थकां ईमानदारी नीं बरती है।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा संपादक डॉ. भूपतिराम साकरिया लिखै कै गजानन वर्मा राजस्थान रा लोककवि है। उणां री रचनावां में जठै राजस्थानी जनजीवण रा मनमोवणा अर सजीव चितराम तो उकेरीज्या ई है, बठैई राजस्थानी में ध्वनि गीतां री

सैली नैं भी जलम दियो है। आं गीतां में घणा सारा किसान-मजूर रा गीत है। गजानन वर्मा लोकगीतां री सैली में नूंवै जुग री प्रगतिशील विचारधारा रै माध्यम सूं गीत लिख्या है। धरती री धुन, सोनो निपजै रेत में इणां री खास रचनावां है। वर्मा री अेक ख्यातनांव कृति 'बारहमासा' है। आ कृति राजस्थान रो रितुकाव्य है। राजस्थानी प्राचीन साहित्य में सैकड़ां सूं बेसी ग्रंथ 'बारहमासा' माथै देखण नै मिलै, जिणमें खासकर शृंगार रस है, पण केई बारहमासा भक्तिपरक है तो केई प्राकृतिक भी है। इण संग्रै री खासियत आ है कै औ गेय गीतां रो संग्रै है, अर कवि इणनैं मौलिक सुर अर राग भी दी है।

डॉ. किरण नाहटा आपरै ग्रंथ 'आधुनिक राजस्थानी साहित्य : प्रेरणास्रोत और प्रवृत्तियां' में गजानन रै रचना संसार माथै आपरा विचार प्रगट करया है। बै आपरी पोथी रै प्रगतिशील खंड में राजस्थान रै प्रगतिशील कवियां माथै लिखता थकां कैवै कै ग्रामीण जीवण री सरस अर मन नैं परसण वाळी गजानन वर्मा री इसी मोकळी कवितावां है जकी जगचावी हुयी है। इण दीठ में वर्मा री 'सोवन थाळ', 'बोलण लाग्या काग' अर 'हिवड़ो आज हरखतो डोलै' जैड़ी रचनावां घणी उल्लेख जोग है। आं गीतां री प्रसिद्धि रो कारण जठै कवि रै कंठ रो मीठास रैयो है, बठैई लोकजीवण री कल्पनावां रो बखाण भी रैयो है, जको आम मिनख रै गिदगिदी करै।

राजस्थानी में ग्रामीण जीवण रा सोवणा अर मीठास सूं रसीज्योड़ा चितराम उकेरण वाळा तो घणा ई कवि है, पण ग्रामीण क्षेत्र री अबखायां अर संघर्ष रै जथारथ रो चित्रण उकेरण वाळा कम ई है। इण दीठ नैं साम्यवादी विचारधारा सूं प्रभावित कवियां ई बढायी है। इण ढाळै रा कवियां गरीबी अर सोसण सूं भांगीज्योड़ै अर अमीर अर जागीरदारां रै एय्यासी जीवण रै साथै-साथै दोनूं वरग रै बिचाळै नाराजगी बढायी है। इणरै सागै गजानन वर्मा री प्रकृतिमूलक रचनावां माथै डॉ. नाहटा लिख्यो है कै वर्मा री खास कृति 'बारहमासा' में लोकजीवण कानी रुझाण अर संगीत री प्रधानता, अै दोनूं बातां देखण में आवै। गजानन वर्मा रोहीड़ै नैं पूंजीपति रो प्रतीक मानता थकां धनवानां माथै सीधो हमलो करै कै उणनैं पृथकतावादी रोहीड़ै रै रूंख नैं संबोधन करयो है।

परंपरा (शोध पत्रिका) रै 'आधुनिक राजस्थानी कविता' विसेसांक में पारस अरोड़ा आपरै आलेख में लिखै कै प्रगतिशील प्रभाव री कीं कवितावां गजानन वर्मा ई लिखी जकी उणां रै 'सोनो निपजै रेत में' लाधै। गजानन मंच माथै आपरी संगीत-पखी गेयता सूं सफळ हुया, काव्यबोध सूं नीं। गजानन वर्मा लोकगीतां सूं बंध'र कीं प्रगतिशील गीत गाया, पण इण प्रगतिशीलता नैं बै लारै जावतां निभाय नीं सक्या, स्यात औ बांरो मकसद भी नीं हो। गजानन वर्मा प्रगतिशीलता नैं कविता सारू अर कविता नैं संगीत सारू बरतै। लोकधुनां रै आधार माथै संगीताऊ आंट में बंध्योड़ी अेक सांस्कृतिक चेतना उगेरतो गजानन रो आपरो न्यारो-निरवाळो काव्य संसार है। इण छतां ई गजानन री प्रगतिशील प्रभाव री

कवितावां रो महत्त्व कायम रैवैला। मंच माथै भी प्रगतिशील कविता में वर्मा रो नांव सिरै रैयो है। इण गत गजानन वर्मा री कविता मजूर-किसान रा गीत गावती सेठां रै माळियै में पूग्यां पछै पाछी इण मारग नीं बावड़ी। मुलक री आजादी रै सागै-सागै कवियां रो अेक पूरो जूथ रो जूथ साम्हीं आयो, जिण रा कवियां आप-आपरी न्यारी-न्यारी ओळख कायम करी। राजस्थानी कविता में बांरी उपलब्धियां निस्चै ई भुलावण जोग नीं है। बां आपरै ढंग सूं राजस्थानी कविता नैं नूंवी गत अर विसय-विस्तार दियो।

गजानन वर्मा रै सृजित सगळै साहित्य नैं फिरोळां तो साचै अरथाव में औ कैयो जाय सकै कै वर्मा आपरै सरुआत रै दौर में जनचेतना रा कवि रैया, पण उणां रै आगै रो सिरजण लोकगीतां री ढाळ, प्रकृति अर पारिवारिक खेत्र कानी हुयग्यो। नरोत्तमदास स्वामी गजानन वर्मा रै लोकगीतां सारू आपरा विचार प्रकट करता थकां कैवै कै राजस्थान मांय आज जकी पीढी राजस्थानी काव्य रो प्रतिनिधित्व करै है, गजानन वर्मा बांरी पैली पंगत रा कवि है।

वर्मा री कवितावां माथै डॉ. कन्हैयालाल सहल लिखै कै देवता मिल'र समदर नैं मथ'र चवदै रतन काढ्या हा, पण लोकमानस रो मंथन कर'र गजानन वर्मा अेकला ई अणगिणत अणमोल रतन काढण लाग रैया है। सीताराम महर्षि मुजब गजानन वर्मा राजस्थानी लोकगीतां रा इस्या गीतकार हा, ज्यांरी कीरत रो बखाण जुगां-जुगां तांई हुंवतो रैसी।

नन्द भारद्वाज आपरी पोथी 'दौर अर दायरो' में गजानन वर्मा रै सिरजण माथै आपरा विचार प्रगट करता थकां लिखै कै गजानन वर्मा री लिख्योड़ी तीन पोथ्यां 1981 सूं पैलां तांई छप्योड़ी है। इण संग्रै री कवितावां कवि री लोकमानस री पिछाण अर उणरी लोक संवेदना सूं गैरी ओळख करावै। अेक गीतकार रै रूप में वां राजस्थान रै ग्रामीण परिवेस अर पारिवारिक प्रसंगां नैं लेय'र लोकगीतां री मनोभोम माथै जिण सरस ढंग सूं गीत लिख्या बां में निस्चै ई लोगां नैं ताजगी लखाई। बांरै गीतां रो मिजाज अर बणगट ई आम लोगां रै काव्य-संस्कार सूं खासी मेळ खावती है। गजानन मूळ रूप सूं रूमानी भावबोध रा गीतकार रैया है अर बांरा गीतां में संगीत-पख री प्रधानता रै कारण बांनै मंच माथै कामयाबी मिलणी सुभाविक ही। गजानन वर्मा लोकगीतां री सबदावळी अर मोटिफ्स रै सागै ई बांरी लय अर संगीत नैं ई सागै लिखणै री कोसिस करी। गजानन वर्मा इण सारू ई गावणै री अेक प्रक्रिया नैं लेय'र कवि मंच माथै आया। गजानन वर्मा री कविता रो गठण आपरै संगीताऊ प्रभाव रै कारणै अेकदम न्यारो स्वरूप लियोड़ो है। नन्द भारद्वाज री आ पोथी छपी उण बगत तांई वर्मा री 'हेलो मार सुर सिणगर' अर 'हळदी को रंग सुरंग' नांव री पोथ्यां छपी नीं ही।

◆◆

शारदा कृष्ण

अबोली मां

अबोलपणो है अबै
मां अर म्हां बिच्चै

लारलै बरस तांई
घणी ई बोलती ही मां
भूंडती टाबरां नैं
मोड़ै ऊठतां
रात्यूं जागतां
बेबगत न्हावतां
नीं खावणजोग खावतां

हटकती म्हनैं भी
जलमदिन बरसगांठां
मोमबत्ती बुझावतां फूंक मार'र
तीज तिंवारां
होळी-दीवाळी
उछब-परबां
बारै जावणो घर सूं
घर रो आंगणो सूनो छोड'र
होटलां री मैफिलां

आशादीप, पिपराळी रोड, सीकर (राज.) मो. 9928743194

मां नैं
नीं सुहावती रत्ती इज
कैवती कीं नीं
पण सुणीजती म्हांनै
सजी सिणगारी गणगौर
म्हांरी बीनणी रो अबै
पारलर पथरणो
किट्टी कळपणो
हेयर कट करावणो
चूड़ी, बिंदी, मैंदी, बिछिया, पायल
बरत-बड्डूल्यां समेत
उजणनो
जाबक गळै नीं उतरतो

पण अबै
सरधा कोनी मां री
भूंडतां, हटकतां, बरजतां, नटतां
थाकगी अर स्यात
कै उथळै ईज नीं जीभ
टाबर दांई जोवती रैवै
उणियारो म्हांरो
पसवाड़ो फोरावण तांई
हेलो नीं करै
पण म्हैं चावूं
मां बोलै
कैवै कीं भी
हटकै, बरजै
राजी बे-राजी
पळूसै म्हांरो माथो
असीसै म्हांनै
बोलती-बतळावती!

◆◆

मनीप्लांट

हर घर में हुवै
मनीप्लांट
पण पईसां री बाफरत
कठै कठैई देखीजै
सगळां कनै कोनी हुवै खाद-पाणी
पौधां पूरतो
दो-च्यार पानड़ा
बिगसाव रो भरम देय'र
मुरझा जावै
पान-पांखड़ी-डांखळ
अंतपंत जड़ां भी
हरी कोनी रैवै।

पाड़ोस्यां री बालकनी रै गमलां में
नित नूंवा टूलरा फूटै
छंटणी भी कोनी करणी हुवै
पीळा पानड़ां री
वै हरग्या रैवै हरमेस।

लोग कैवै—
मनीप्लांट बीज नीं, कलम सूं पांगरै
दूजां रै बगीचै सूं
छांनै -मानै ल्या'र लगाईजै
पईसां रो पेड़
अर पईसा भी
इयां ईज फळै-फूलै स्यात!

रुपियो अर रोटी दोन्यूं ई
हुवै गोळ

ISSN : 2320-0995

रोटी सूं तिरपतीजै काया
अर रुपियो बधावै तिरस।

पईसां री निवज
लाटणिया बौपारी
मुलांवता फिरै भर-नींद सुपना
मन रुचतो जीमण
अणतोल्यो अपणेस।

मानव सभ्यता रै सरुपोत सूं
किसान उगायो है अन्न
पईसा नीं
बीं रै कोठ्यार में
चिड़ी, कमेड़ी, कीड़ीनगरो, जीव-जिनावर
पांख-पंखेरू, पसु-मवेसी
साध-संन्यासी, बैन-सवासण
हाळी-पाळी
देव-दीवाळी सगळां रो सीर हुवै
मांदी निपज में वो
बांध लेवै पेट रै पाटी
पण नीं उगावै
पईसां रा पेड़

वो जाणै
मिनख अर भूख रै बिचै
अन्न अेक नांव है
तिरपतीजती काया रो
बोलती भासा रो
जीवण री आसा रो
रोटी निपजै खेत में
रूंख पर नीं लागै
मनीप्लांट रा रुपियां ज्यूं।
◆◆

मनु गांधी री डायरी

बापू री अेक सौ पचासवीं जयंती
उच्छब रै ओळावै
याद करां मनु नैं
जिणरी डायरी रा पाना
हाल फड़फड़ावता फिरै
साबरमती री सांसां
सत रै संकळपां अर प्रयोगां री
आंच दाझी वा
गोडसे री गोळियां रा तीनूं धमाका
झेल्या बापू साथै
आपरै अणभोळ अंतस।

हे राम!
थांरै हाजर हुंवता
मौन हुयग्या महात्मा
बिरला हाऊस री प्रार्थना-सभा रो
बो बजराकी हाहाकार
अटबयो बीं रै कानां
जीभ चिपगी ताळवै
अर भींत बणी मनु रै हाथां
छूटगी डायरी!

अप्रेल '43 सूं फरवरी '48 तांई री
बीं अधूरी जूण-जातरा में
बापू रो सबसूं बेसी
अपणायत भरयो भरोसो
थांरै कांधां हो मनु
थांरी डायरी में
आखै आश्रम री दिनचर्या

दिनूगै-सवारै री भजन-आरती सूं लेय'र
बापू अर बीमार कस्तूरबा री
दवाई-पाणी-चाय-दूध
खांखरा-रोटी-साग
न्हावण-धोवण-चौको-चूल्हो-बरतण
पढणो-लिखणो, चरखो कातणो
अर गीता-पाठ समेत
और नीं जाणै कितरा कमतर अंवेरती
निसदिन!

आखरी दिन बापू री जागती चिता साम्हीं
अबोली हुई बैठी तूं
सोचती हुवैली
डायरी रा छेहला पानां माथै
कीं और मांडणो
पण 1943 सूं लेय'र
22 फरवरी '48 तांई
दस-पंदरै डायरियां रा
हजारां पानां माथे
देस री आजादी लेखै करीजी
आफळ, उथळ-पुथळ अर बापू समेत
अलेखूं आगीवाणां री खरी खेचळ रा
दस्तावेजी प्रमाण
आजादी री लड़ाई लेखै
आपरै मुलक री हूंस अर हौसलो
थांरी डायरी रा पानां री
अैतिहासिक महताई में
उल्लेखजोग बधेपो करै।

आज रै भारत रो इतिहास
गांधी दर्शन, जीवन अर चिंतन री चितार
आं डायरियां में

अवसकर ओळखीजैली
आवतै बगत मांय
क्यूंकै डायरी
अेक विधा मात्र कोनी लेखन री
खुद सूं खुद रो सामनो है!

दरपण रै बिंब-पड़बिंब जियां
जितरो जियां थांनै सूझै
आम्हीं-साम्हीं
उणसूं बधतो साचो, साव
अर ऊजळो किणी दूजै सूं
नीं जोईजै कदैई

मनु री डायरी
गांधी डायरी रो
पूरक प्रसंग है।
◆◆

ISSN : 2320-0995

ओम नागर

कान्हजी

(अेक)
कोई थनै
हेरै बी तो क्हां कान्हजी !

हेरता–हेरता
खुद ई हो जावै आळमाळ

जस्यां राधा
जस्या मीरां।

(दोय)
कोई थनै
ध्यावै बी तो कस्यां कान्हजी !

ध्याता–ध्याता
खुद ई बण जावै अरदास

जस्यां गोप्यां
जस्यां रसखान

(तीन)
कोई थनै
पावै बी तो कस्यां कान्हजी !

पाता–पाता
छोड जावो गांव–नगर–डगर

जस्यां गोकुळ
जस्यां मथरा।

(च्यार)
कोई थनै
बीसरै बी तो कस्यां कान्हजी !

बीसरता–बीसरता
ओळ्यूं हो आवै करुण चितार

जस्यां द्रौपदी
जस्यां सुदामा
जस्यां नरसी।

साहित्य अकादेमी, 172, मुंबई–मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर (ईस्ट) मुंबई 400014 मो. 9460677638

(पांच)
कोई थनै
भजै बी तो कस्यां कान्हजी!

भजता-भजता
भाग सरावै खुद ई खुद का

जस्यां कदंब
जस्यां गोवरधन
जस्यां बंसरी
जस्यां मोरपंख।

(छह)
कोई थनै
मनावै बी तो कस्यां कान्हजी!

मनाता-मनाता
हो जावै छणीक-सी बगत ई

जस्यां माखण
जस्यां मिसरी
जस्यां माटी।

(सात)
कोई थनै
अरथावै बी तो कस्यां कान्हजी!

अरथाता-अरथाता
गळ जावै भीतर को डमस

जस्यां उधो
जस्यां इंदर

(आठ)
कान्हजी थां
थोड़ा-थोड़ा सब में छा

थोड़ा गोकुळ में
थोड़ा बरसाणै
थोड़ा मथरा
थोड़ा द्वारका
थोड़ा कुरुछेत्र

थोड़ा-सा जमना जी में
थोड़ा-सा बैकुंठा बी

थोड़ा-सा देवकी में
थोड़ा-सा जसोदा में बी

थोड़ा-सा रुकमण में
थोड़ा-सा लछमी जी में

पण
राधा में कान्हा
पूरमपार।

◆◆

ISSN : 2320-0995

सुशील एम. व्यास

मैण ज्यूं पिघळजा

पड़तो-पड़तो संभळ जा
अंधारा सूं बचतो जा
दुसमणां में साथी तलास
मैण ज्यूं पिघळतो जा
मूंढो मत ना ढेर थूं
गुलाब ज्यूं खिलतो जा
बाग-बगीचा है थारा
थूं भंवरो बणनै गायां जा
भीड़ रै लारै मत चाल
थूं खुद रा चोळा पळटै जा
फोलिया चिणा सगळा खावै
थूं कोपरिया चबायां जा।

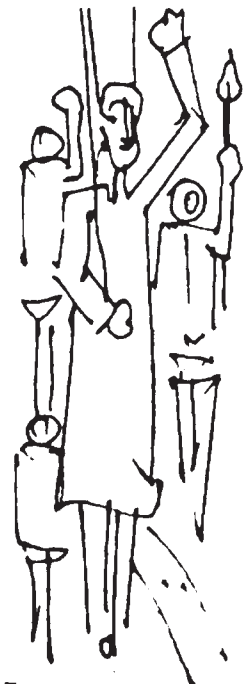

भाव म्हारा गूंथी है गजल

अपणै आप ई बणगी गजल
बरखा री भांत उमड़ी गजल
मनड़ै रा विचार बणी गजल
भाव म्हारा गूंथी है गजल

चांदपोळ चौका, जयनारायण व्यास कॉलोनी, जोधपुर (राज.) 342001 मो. 7425923960

भुगत्योड़ा भाव उतरिया
इण धरती माथै तो
बादळियां रै किनारै सूं
आ बण आई गजल
बदळता दिनड़ां री नीं
जोवै बाट आ गजल
मौसम रै परवाणै अपणै
आप बच जावै गजल
लोग सरावै घणा म्हांनै
सरावता ई रैवैला
इण होठां माथै मुळकती
आई ही आ गजल
जीव घणो राजी हुयो
नव-नव ताळ उछळिया
जद छपियोड़ै नांव रै सागै
छपी ही म्हारी गजल।

मिनख : अेक सवाल

मिनख कुण है?
अेक सवाल
म्हारै मन में नित उठै
भेळो हुग्यो आदमी
खुद रै खुद में ईज
रैयग्यो है अबै मिनख
नित नूंवी-नूंवी बातां
इक-दूजै सूं घातां
मिनख-मिनख रै बिचाळै
खासी लांबी पड़गी छेटी
डील घणो दुख पावै
यो जाणै है कै
मिनख मानै कीं नीं
खोळियो माथै अर
मांय हाड-मांस-रगत
तांई इक-दूजै सूं
पजतो रैवै, लड़तो रैवै
आ ईज ठा नीं पड़ी
कै मिनख है कांई!
कोरो मन रो वैम
कै कीं है मिनख?
मन री अळूझाड़
मिनख टूटग्यो
हंसणो नीं कारो रोणो
इक-दूजै सूं कोरा
सवाल ई सवाल करणा
आपरी अळूझाड़ में ईज
अळूझग्यो मिनख!

यूं ई मती मानजै

मानलै म्हारी बात नैं
मानलै उणरो मिलण
टाबरपणां सूं लड़बो जाणूं
जे ठण जावै तो मानजै मती!
मिनखपणो तो दीसै नाहीं
साथ छूटै तो मानजै मती
साच बोलणो म्हारी कांण
मिरचां लागै तो मानजै मती!
◆◆

ISSN : 2320-0995

किरण बाला 'किरन'

समझो थे तो म्हनैं बतावो

आ रुत रोवाणै रात कदी
अर कदै हंसावै

ओ प्रेम झरै है आंख्यां सूं
अर कदै हंसावै

मेह जम्योड़ा खितिर ऊपरै
आंख्यां नित झकोरा खावै

सबद फूटै नीं होठां सूं
पगल्यां ठाम जम जावै

इण जीवण री विरक्ति माथै
आसक्ति कैयां रोब जमावै ?

समझो थे तो म्हनैं बतावो
जीवण कियां हिचकोला खावै ?

40, अद्वैतम, चूंडावत्स, लेटेस्ट टैंट हाउस रोड, बीडीओ कॉलोनी, बलीचा, उदयपुर (राज.) 313002
मो. 9462514882

कसक काटणी पड़सी

म्हारो आंळ पूछ रैयो है
इण बार कांई
रंगो कोनी गोरी म्हनैं ?

मनड़ा पे हाथ धर्‌यो अर
लंबी उसांस लेयनै बोली—
ज्यादा कसक मत अे चूनरी !
कुण रंगैलो थनैं ?
पिया बसै परदेस
आवता फागण
होसी फाग थारो
इण बार तो थनैं
म्हारै जियां
कसक काटणी पड़सी !

धरती करै धारण

बीज रो बोवण
आ धरती ई धारण कर सकै
आपणा गरभ मांयनै
धरती धारण करै
समरपण करै अपणै-आपनै
जद बीज अणंत व्है सकै
नींतर बीज रो रोपण
धर्‌यो रो धर्‌यो ई रैय जावै।
बीज मांय रैवै धरती रै
फूटै, ऊगै, फूलै, फळै
फेर अणंत बण जावै
बीज रो अणंत व्हैणो
धरती रै त्याग बिना
कियां व्है सकै ?
अर बीज रो टूट'र पांगरणो
कुण समझ सकै
मिनख तो टूट'र ई बिखर जावै।

टाबरां रा सुपनां खातर

मां आपरा सुपनां नैं
बंद कर बक्सै मांयनै
आंख्यां खोल ली
बायां पसार ली
डग भरणी लागगी
लंबा-लंबा
पेट आधो काट'र
भंडारिया मांयनै मेलण लागगी
लूगड़ा अेक रा दो चीरिया
आंख्यां रा नीर नै
जावण दीधो
अर आंचळ रा दूध नै
नीवण
कै टाबरां रा सुपनां खातर
मां अेक नूंवो बक्सो लेय'र
आई है !

◆◆

 ISSN : 2320-0995

सी.अेल. सांखला

भाग्यो कोइनै म्हूं

म्हूं तो
आज बी व्हांई छूं
ज्यांह क्हाल छो
भाग्यो कोइनै म्हूं... !

छोडतो बी कस्यां
ऊं धूळ नैं
जीं ठौर पैलपोथ
मांड्या छा पगल्या
बहमाता नै
हरख-हरख'र
मायड़ का
हेत को परमाण
नाळवो
गड्यो छो ज्यांह
ऊभो छूं जनम सूं
आती-जाती रुतां का
झरझरता
बरफाया
झकराया

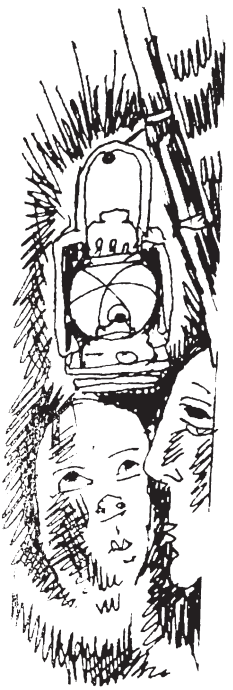

'सबदवन', पो. टाकरवाड़ा, जिला-कोटा (राज.) 325204 मो. 9928872967

बाइरा का मठेठ ईं
भांपतो
अर झेलतो
बखत का झंझोड़ान ईं
छाती माथा पै
छणीकसो झुकतो बी रह्यो
फैल फतूरान के आगै
पण जाणै बी कांई
ईं बात को अरथ
अेंधी-बरबूळ्या
बगत की मसीनां
ऊंची डूंगरी का भाटा
खोद-खोद'र
लेगी होवै टरोल्यां भर-भर'र
पण म्हूं
हाल बी वांई छूं
देख्यूं छूं फूल पांखड़्यां
अर सेळी छाया
ज्यो बी आ जावै छै
ईं छापर पै
गांव-घेर की लेरां
छटक तो थां रह्या छो
भाग तो थां रह्या छो
आक्रमणकारी की नांईं
खुराड्यां हात में ले'र
म्हूं तो हाल बी ऊभो छूं
व्हां को व्हांईं
दरखत छूं जुगाती।

◆◆

ISSN : 2320-0995

कमल रंगा

जंगळ

खेजड़ी उदास है। उबासी पर उबासी कैर लेय रैयो है। बोरटी री डाळी सूं झर-झर रोंवता पानां चौफेर बिखरया पड़्या है। फोग कठैई दीसै ई नीं है। रोहिड़ो हो कै नीं हो, ठाह ई नीं लागै है। औ म्हैं देखूं कै म्हारी आंख्यां। चौफेर, थम'र जंगळ बिचाळै। औ जंगळ है? कै जंगळ हुवण रा अैनाण-सैनाण है। सवाल म्हारै साम्हीं हो। म्हैं सवाल रै साम्हीं हो। इण गत दोनूं जंगळ रै साम्हीं हा। अै दरखत है कै दरखत नीं है। देखूं, धोरा हांफता-हांफता गैला हुयग्या है अर देखतां-देखतां काळी-पीळी आंधी बिचाळै सैंग गुमग्या है। म्हैं काळमस बिचाळै खड़ो हो कै काळमस म्हारै चौफेर घूमर घालै हो। काळमस म्हारै चौफेर हो कै काळमस म्हारै मांयनै हो। पण काळमस हो। कद सूं, कुण जाणै?

माळा

म्हारै भी घर है। घरां जिसो ही घर है। घर है तो घर री बात है। घरां खूंटी टंग्योड़ी अेक तस्वीर है। म्हां तस्वीर इण वास्तै टांगी है कै म्हे बांनै देखता रैवां अर बै सगळै घर नैं, सगळा हालात नैं। दादोसा री तस्वीर ऊंची है। रुद्राक्ष री माळा उणां रै गळै मांय अजै है। पण म्हां बाजार सूं मोल लाई माळा उणां नैं पैराय राखी है। दादोसा री आंख्यां दोनूं माळावां नैं देखै। पछै म्हनैं देखै है। अर उदास निजर आवै है।

रंगा कोठी, सुकमलायतन, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर (राज.) मो. 9928629444

रात रै अंधारै उजास हो

धोळै रंग रो कागद हो, टेबल साम्हीं म्हैं बैठ्यो हो। ट्यूबलाईट री रोसणी कमरै मांय ही। उजास हो। रात रै अंधारै उजास हो। कागद रै धोळै रंग रो, कै ट्यूबलाईट रो कै दोन्यां रो पण उजास हो। रात रै अंधारै उजास रो हुवणो अेक जरूरत अंधारै री रात री। म्हैं उजास रै पाण ई कीं मांडण री हठोठी कर रैयो हो। धोळै कागद सागै काळी स्याही सूं बाथैड़ा करै हो। इण टैम म्हारै सागै रात रो अंधारो, मांय री काळमस अर स्याही रो काळो रंग हो। तो कागद रो धोळास, ट्यूबलाइट री रोसणी अर सबदां रै साच रो शुद्ध सफेद भी सांपरतेक हो। रात रै अंधारै म्हैं इयां सूं लड़ै हो? स्यात अंधारै रै डर सूं, कै इण सूं मुगती पावण सारू। पण हां, म्हैं सांगोपांग लड़ाई लड़ रैयो हो।

थांरी-म्हारी जिंदगाणी

ओळूं। ओळूं आवै है। ओळूं नीं भी आवै है। ओळूं क्यूं आवै है? ओळूं रो म्हासूं कै थांसूं कीं रिस्तो है। हां, है तो सही। पण ओळूं सूं रिस्तो आज रै मिनखां बिचाळै रिस्ता ज्यूं कै कीं दूजै ढब रो! रिस्तां री आ फळावट कीं झीणी है। पण रिस्ता तो रिस्ता ईज हुवै है, कै चोखा कै माड़ा, पण नांव अेक ईज—'रिस्ता'। रिस्ता-ओळूं, ओळूं-रिस्ता मिनख री जिंदगाणी रा खाटा-मीठा सुपना है। ओळूं रै पाण सुपनां, सुपनां रै पाण ओळूं है। ओळूं-सुपनां थांरी-म्हारी जिंदगाणी रा साव काचा रिस्ता है?

धोरै ऊभो

धोरा बसी म्हारी प्रीत रा कूं-कूं, केसर मंड्या पगल्या अजै बधै है। म्हारी ओळूं—धोरा धरती। बधता-बधता कणैई बिसांई खा ई लेवै। खेजड़-कैर-बोरटी री छांव हेठै। पण फालां री मीठी पीड़ रै सागै फेरूं बधती ई जावै है। उण रा कंवळा-कंवळा पग म्हारै नजीक पूगण खातर। म्हैं भी अजै उडीक करूं हूं मरुथळ रै मनड़ै बसी तिरस रै पाण, चौफेर धोरा ई धोरा बिचाळै सैं सूं ऊंचै धोरै ऊभो।

◆◆

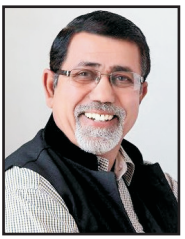

दीनदयाल शर्मा

होळी

रंगां रो त्यूंहार सांतरो
रळमिल खेलां होळी

लाल, गुलाबी लीलो पीळो
भरल्यां आपां झोळी

पिचकारी री धार चलावां
रंगद्यां गाभा सारा

नाचां, कूदां, उधम मचावां
गाणां गावां न्यारा

अेक दूजै रै रंग लगावां
आपां री आ रीत

अपणायत में हुवै बधेपो
घणी बधैली प्रीत

10/22, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, हनुमानगढ जं. (राज.) 335512 मो. 9414514666

गांम

छोटो-सो है म्हारो गांम
खेती-बाड़ी अठै काम

फळ-सब्जी अठै ताजा बिकै
कदी खरीदो सुबै-शाम

गा-भैंस्यां रो दूध ई बेचै
पण नीं मिलै पूरा दाम

भोळा-भाळा लोग अठै रा
करै भरोसो खास-ओ-आम

सगळी जात धरम रा रैवै
रामा-स्यामा करै सलाम

ऊंदरा

ऊंदरिया घणी उधम मचावै
चीं-चीं, चूं-चूं करता जावै

अेक-दूजै रै आगै-लारै
सुबै-शाम अै दौड़ लगावै

गाभा, कागद, पोथ्यां रा अै
कतर-कतर'र चूरो बणावै

खाणआळी चीजां नै ऊंदरिया
खावै कम अर घणी खिंडावै

पकड़ण सारू पींजरो राखां
पण इणमें अै कदी नीं आवै

बिलड़ी दिखतां ई ऊंदरिया
केठा अै किन्नै लुक जावै!

तिरंगो

फर-फर-फर फैरावै तिरंगो
गांव-स्हैर लैरावै तिरंगो

देसप्रेम रो पाठ पढावै
आजादी रो नाम तिरंगो

थमणै रो औ नाम नीं लेवै
दिन-रात लैरातो रैवै

मायड़ भौम री आन तिरंगो
भारत मां री स्यान तिरंगो

मेढक

टर-टर-टर टर्रावै मेढक
बिरखा में दिख जावै मेढक

जळ-थळ दोनां में औ रैवै
फुदक-फुदक इतरावै मेढक

पाणी में औ तिरै सांतरो
पग पतवार बणावै मेढक

च्यारूंमेर इणनै दिख जावै
सिर पर आंख्यां पावै मेढक

इणनै कोई पकड़णो चावै
हाथ कदी नीं आवै मेढक

बिन गरदन रो जीव उभैचर
गाणां रोज सुणावै मेढक

◆◆

ISSN : 2320-0995

डॉ. निर्मला शर्मा

वीर महाराणा प्रताप

राजस्थान री माटी पर, जब राणा रो जनम हुयो
जेठ शुक्ल री तृतीया पर, कुंभलगढ में सूरत चमक्यो
राजस्थान री आन रो रखवाळो, वो अजब बड़ो सैनानी
जीवन भर स्वाभिमान री खातर, देतो रह्यो कुरबानी
सिसोदिया वंश री धरोहर, वो वीर बड़ो सम्मानी
कुंभलगढ रै किला में जनम्यो, जिणरी म्हैं लिखूं कहाणी
माता जिणरी जीतकंवर सा, पिता है वीर उदयसिंह
त्याग, शौर्य, वीरता बलिदान में, सदा आगै रह्यो वो सिंह
पूत रा पांव पालणै दीखै, या कहावत चरितार्थ कर माना
बाळपणै सूं सब गुण दीखै, व्यक्तित्व महान था राणा
राजस्थान री आन, बान और शान रो वो रखवाळो
उणरै आगै जो कोई आयो, मुंह की खायो भाग्यो
हळदीघाटी रा जुद्ध री धरती पै प्रसिद्ध कहाणी
मुगलां री सेना रा छक्का छुडाया, वो तलवार रो धणी
चेतक री जब करै सवारी, रण में तलवार चलावै
बैरी री सेना डर भागै, केसरिया बाना ही लहरावै
दानी भामाशाह नै भी, अपणो करतव्य निभायो
भीलां रै सैयाग सूं राणा उण अकबर कूं झुकायो
वा वीर शिरोमणि देसभक्त नैं, झुक-झुक शीश नवाऊं
या वीरां री धरती पर, ऐसो व्यक्तित्व कभी न पाऊं
वो स्वाभिमान रो सूरज, वो तो वीर बडो बळिदानी
माटी रो करज चुकाणै कूं, जीवण री दी कुरबानी

◆◆

जैसवाळ कोठी रै लारै, पी.जी. कॉलेज रै कनै, आगरा रोड, दौसा (राज.) 303303 मो. 9414359857

दीपसिंह भाटी 'दीप' रणधा

टेम आयगो खोटो

आज हळाहळ कळजुग आयो, किणी नैं कीं न कैणो
आदत रो लाचार आदमी, पेटै पापी पैणो
साच सीख दै कोई साथी, मानै लेवै मैणो
औगणगारो बकै अणूतो, गाळी जिणरो गैणो
चज्ज पखीणो थूकै चाटै, तूंडै बारो लोटो
दुनियां रा रंग देख दीपिया, टेम आयगो खोटो!

भाई रा पग भाई बाढै, उलळै आडो आवै
ठालो बैठ्यो मार ठहाका, सगळां नैं संतावै
खाऊं-खाऊं कर खळ्योड़ो, बणियोड़ो बिगड़ावै
कुळ कुड़बै रो करै कबाड़ो, जीवतो नरक जावै
मूढ गमावै मिनख-जमारो, ज्यूं पाडी रो झोटो
दुनियां रा रंग देख दीपिया, टेम आयगो खोटो!

बापां साम्हां बोलै बेटा, बक-बक कर बोलावै
पापा थांनै कहीं पतो नीं, सीखां दै समझावै
माईतां नैं कीं नीं मानै, ताड़ि मितर तैड़ावै
बीयर-दारू देखै बोतल, नाचै और नचावै
आखी रात पियै अणमापो, कदै न पूरै कोटो
दुनियां रा रंग देख दीपिया, टेम आयगो खोटो!

पंच करै खोटै पंचादै, कदै नीं साची कैवै
गरीबां नैं गिड़कायै अै, लूंठां रो पख लेवै

निदेशक, डिंगळ रसावळ शोध संस्थान, बाड़मेर (राज.) मो. 9413307889

 ISSN : 2320-0995

मींचै आंख्यां गटकै माखी, दुबळां नैं दुख देवै
बोदी नीती रा बड़बौला, रुघड़ाई में रैवै
अनीती रा बेली है अै, देवै कूड़ो दोटो
दुनियां रा रंग देख दीपिया, टेम आयगो खोटो!

राजनेता जगत रिझावै, कूड़ा कवल करावै
झाड़ै भासण देवै झांसा, पब्लिक नै फुसळावै
वोटां खातर आवै वळ-वळ, बापू कह बतळावै
जीतै पाछै भाजै जावै, लांणो नीं दिखलावै
पगां पड़-पड़ रोज पकावै, राजनीति रो रोटो
दुनियां रा रंग देख दीपिया, टेम आयगो खोटो!

बोलै बड़का बोल बहूड़ी, सासू नैं सटकावै
कूड़ा सूड़ा करै काचड़ा, तकड़ी व्है तटकावै
हेकल भमणै चीलै हालै, भायां नैं भुटकावै
मोबाइल में घालै माथो, चैटिंगां चटकावै
सै टाबर भूखा सोवै, जद गजबण आवै गोटो
दुनियां रा रंग देख दीपिया, टेम आयगो खोटो!

साचै रो न कोई संगाथी, झूठै रै सब जावै
नकटां रै रैवै नित नेड़ा, खोट घणेरो खावै
साळी ओढै चीर सुरंगा, बैनड़ नैण बहावै
बूढा माईतां नैं बेटा, विरधाश्रम विलमावै
मरै गई उजळी मरजादा, तंतपणै रो तोटो
दुनियां रा रंग देख दीपिया, टेम आयगो खोटो!

बुढियां कनै बाज नीं बैठै, अकल कठै सूं आवै
संस्कार सिमटग्या सगळा, पछम रीत पनपावै
दादी नानी बातां दबगी, टीवी मींट गडावै
देखै तिलिस्मी तौतक जादू, हांसै और हंसावै
गीगै रो खुणखुणियो गायब, मोबाइल है मोटो
दुनियां रा रंग देख दीपिया, टेम आयगो खोटो!

◆◆

व्यंग्य

छत्र छाजेड़ 'फक्कड़'

कुण कैवै रामराज कोनी

भारत सरीखी धरम-धरा रा राष्ट्रपिता 'बापू' मतलब कै महात्मा गांधी अर जनता बुलावै है—गांधी बाबो... ई जनता रै बाबै रै गोळी मारी। बाबो मरण नै तो मरग्यो पण मरतो-मरतो बोलग्यो—'हे राम...!' आगै भी बोल्यो पण बा कोई बतावै कोनी, पण आज म्हैं थांनै बतासूं कै बो के कहग्यो हो! बतासूं भी अेकदम साच क्यूंकै म्हैं बठै ईज ऊभो हो। थे पूछस्यो कै तनैं कींकर ठाह... तूं तो जाम्यो ई कोनी हो? बात थांरी भी सही है पण नेतावां नै बोटां वाळी बगत जनता चेतै आवै बियां ई बगत-बेबगत म्हनैं भी लारलै जलम री केई बातां चेतै आ जावै। खैर! जलम-जलमांतर री बातां ओज्यूं करसां... आज रो विसै है कै बापू के कैयग्या हा... हां, बै बोल्या—हे राम... म्हैं तो चाल्यो, अबै औ देस थांरै भरोसै है... थांनै ई चलाणो है, रामराज लावणो है... आ भौम रामराज तांणी जाणीजै... बांरी अकल पर तो भाटा पड़्या है जिका अबै भी रामराज लावण री बातां कर मिनखां नैं बांदरा बणावै... म्हारो जी तो आज घणो राजी है... अठै रामराज है... कुण कैवै, रामराज कोनी?

म्हैं जाणूं कै थे म्हारी मखौल उडास्यो कै फक्कड़ री अकल तो घास चरण गई... हंसण नै हंसल्यो... पण ठाह तो है कै रामराज कैवै किणनै है... म्हारी निजर में तो देस में रामराज ई चाल रैयो है।

बी-76, आनंद विहार, दिल्ली 110092 मो. 9350051179

 ISSN : 2320-0995

के कमी है... कठै कमी है ? आज कुणनै कुण रो डर है... ? ना बेटो बाप सूं डरै, ना चपरासी साब सूं डरै... जिके रै जियां मन में आवै बियां बकै... कुरसी पर बैठ्यां नै विपक्ष वाळा चोर कैवै तो काल जे बै खुद कुरसी पर बैठज्या तो लोग बांनै चोर कैवै... जनता चकरीबम ! ठाह ई कोनी पड़ै कै चोर है कुण... ? बस बोलण री आजादी है... सांमलै नैं चोर कैवै अर भेंट लेवै। जनता रै तो चोर-चोर मौसेरा भाई... छोटो चोर देख बोट दे दै... बा बात और है कै कुरसी मोटो चोर बणा दै तो बै के करै... हां, है सगळा अेक ई थैली रा चट्टा-बट्टा... नूंवो के है ? बोलण री छूट रा मजा तो रामराज में ई देख्या हा। अेक धोबी रा बोल खुद रामजी रै गळै घंटी बांध दीन्ही अर अबै संविधान आजादी देय राखी है कै अभिव्यक्ति री आजादी है... मरजी आवै ज्यूं बोलै अर माल घरां तोलै तो बता भायला औ के रामराज कोनी !

भायला ! मजो देख कै सगळा थाळी रा बैंगण है इकसार... जठीनै दीसी कुरसी हुड़क लिया बिन्नै ही... काल रा काळा चोर आपरी पारटी में आवतां ई होज्या धोळा-धप्प बुगलै री जात, बा बात और कै जग के समझै... समझै जिकां नै समझण देवो। आगलै रै तो उजळास बापरग्यो अर साथै कुरसी अर कुरसी नईं तो नै सही... कुरसी री टांग ही जे हाथ आयगी तो डूबता नै घोटा रो स्हारो... हूं सूं ई बैतरणी पार लंघ लै... रामजी तो प्रेम में शबरी रा बोरिया खाया पण अै भायला तो गिटावो ज्यूं ई गिटलै... सावळ गिटै तो ठीक, नीं जणां अे.के. फोरटी-सेवन वाळी गिटाण नै त्यार बैठ्या है। आपरै रामजी री हुकम देर है... जियां मरजी करै, फेर क्यूं कैवो कै रामराज कोनी ?

पड़ै जिको ई आ कैय जावै—म्हे रामराज लास्यां... बस, थांरो बोट म्हारै पड़णो चाईजै। पोगा-पोगा'र बोट लेज्या... सौ रकम रा फोरां में उळझायां राखै तो बापड़ी जनता तो चेताचूक होणी ई है, बीं री सोचणै री सगती जबाब देज्या कै कियां रामराज आसी ! कठीनै सूं रामराज आसी ! भोळी जनता नै के ठाह कै रामराज तो आयो ई पड़्यो है पण आज आं भोळा लोगां नै म्हैं तथाकथित स्वयंभू बुद्धिजीवी देस में पसरयै रामराज रा दरसण करासूं—

आज देस में पक्ष-विपक्ष दोवूं ई चिंत्या करै तो बस गरीब री... गरीबां रै नांव सूं नित नूंवी योजना बणै। इण काम में सगळा अेक है, जियां विधायक अर सांसद आपरी तनखा सागै पैंसन, अर सुख-सुविधा बधावण में अेकै सागै रैवै बियां ई गरीब री चिंत्या में सगळा दूबळा होया रैवै... गरीब नै 'फ्री' बांटणै में बो बीं सूं आगै अर बो बीं सूं... होडाहोड माच राखी है... लारलो धक्को देय'र आगै आवण री ताक में रैवै। फ्री रासन, फ्री बिजळी, फ्री पाणी, फ्री पढाई, फ्री इलाज और के बाकी रैयग्यो ! किसानां नैं, बूढा-बडेरां नैं, लुगायां नैं... और तो और, आगोतर सुधारबा नै तीरथ-जातरा फ्री... अेक-दूजै नैं

टल्लो देय'र कैवै—म्हारलो फ्री बढिया है... अबै बता भायला, के घटै रामराज में... ? इसा परलोभन तो खुद रामजी ई कोनी दिया हा, फेर भी कैवै—रामराज कोनी।

दसकां पैली मैथिली शरण लिखग्या हा कै—'श्वानों को मिलता दूध-भात'... पण आज देखूं तो भायला उण थित्यां सूं घणा आगै बधग्या... ठाडी-ठाडी कोठ्यां होवै चायै झूंपड़-पट्टी... घरां में गिंडक बंध्या है... अर केई म्हारै सिरखा स्याणा झूठी तख्ती ई टांग्यां राखै कै कोई ओपरो निजर नै घालै... मजा तो आं गिंडकां रै लाग्या है कै जाडै गिद्दैदार सोफां पर घर री महकती-चहकती धिराण्यां रै इयां लिपट्या रैवै जाणै कूख सूं जाम्यो टाबर लिपटै... बा बात और है कै खुद रा टाबर धाय मां सूं लिपट्या रैवै... बडी-बडी मर्सिडीज गाडी री मोरी सूं मूंडो काढता झबरा कुतिया नै देख कित्तां रै काळजै सरप सा लोटै... इत्तै में के सरै! स्हैर हुवै चाहै कस्बा, मैन बजारां में मिनखां बरोबर बोभी बकरा...सांड सींग भुंवाता घूमै तो अै के रामराज रा लखण कोनी... और तो और, अठै नेता अर डांगरा बरोबर चारो चरै, फेर भी ठाह नीं क्यूं कैवै कै रामराज कोनी!

आज रो दिन, देस रै इतिहास रै ठाडै दिनां में आसी... आज दो टावर सौ मीटर ऊंची नौ सौ फ्लैट वाळी नै नौ सैकंड में मटियामेट कर नाखी... आ कोई पैली घटणा कोनी... 2005 में जरमनी में सवा तीन सौ मीटर रो मकान भी जमींदोज करीज्यो... पण इण देस रो पैलो मौको हो... टीवीवाळा नौ सैकंड रै काम रो रोळो मचाण नै नौ घंटा पैली सूं लाग्या अर नौ घंटा बाद तांणी मचाता रैया... सोरेन री ढहती कुरसी रो रोळो दबग्यो... इत्तो रोळो तो पैलपोत अपोलो चांद पर उतर्‌यो तद ई कोनी होया... पण थे सोचता होस्यो कै अकल रो दुस्मण फक्कड़ कठै रामराज रै मांय ईंनै फंसावै... तो बता द्यूं कै इण राम रै देस में सगळा जीवै आपरी मौज... आ मिनख री मनजची ही कै इत्ती ठाडी बिल्डिंग बणा दी... दस बारह बरस अदालतां रा भचीड़ खाया... छेकड़ सुप्रीम कोर्ट हुकम दीन्यो कै टावर ढहा देवो... देस री नौ सौ करोड़ री संपत्ति नौ सैकंड में मटियामेट... कोई दूजो गेलो भी निकळ सकै हो...पण ना, ऊपर सूं अठारै करोड़ और खरच कर'र आडी नाखी... सैं री आपरी मरजी... सै लकीर रा फकीर, बोल्या—भ्रष्टाचार री टावर है। पण सोचो कै देस री संपत्ति नास करणै रो कुण कैयो? सजा देवणी है तो भ्रष्टाचारियां नैं देवो... बै तो छुट्टा सांड-सा घूमै... अै रामराज रा ईज तो लखण है कै जिकै री मरजी चलावो अरजी होवै चायै फरजी, सगळा आपरी अकल मुजब हांकै, फेर भी कैवै कै रामराज कोनी।

भगवान मिनख नैं अकल दीन्ही है, पण कोई नीं बरतै तो कोई के करलै? ...बिना सोच्यां-समझ्यां झंडा चक लै तो आगलै री मरजी... सै खुल्ला है... इण सूं बत्ती कै परमाण देवूं रामराज रो... ठाह नीं फेर भी क्यूं कैवै कै रामराज कोनी...!

◆◆

संस्मरण

मनोहर सिंह राठौड़

सुरसती मासीसा

सुरसती मासीसा नैं आप नीं जाणो। बिना जाण-पिछाण कियां जाणीज सकै? पण म्हारै नानाणै रै आसंग-पासंग रा गांवां रा सगळा जणा बांनै आदर भाव साथै सावळ जाणै। म्हारै नानाणा में बै अेक देवी रै रूप में सगळां रै मनड़ै में ठावी ठौड़ थरपली। आखो गांव बांनै ठावी-ठीमर, सांतरै मन री, सगळां रो भलो चांवण वाळी, हदभांत अपणेस राखण वाळी लुगाई रै रूप में जाणै। बांरै सुभाव में अैड़ो आंकस हो कै कोई लुगाई-टाबर-आदमी बां सूं बतळाती बगत अेक आंकस आपै ई मानतो। बियां हरदम हाथ में माळा लियां, आपरा इष्ट रो सुमिरण करतां री बांरी छिब निगै आया करती। नानाणा में आटो मांगण वाळी पुजारी जी री बहू निरमी भुआ, नायण, दाई मां अर कीं अैड़ी ई लुगायां ही जिणां री घर-घर में अणूती आव-जाव ही और कीं स्याणी-समझणी, हरेक रै ओड़ी में आडी आवण वाळी सांतरी लुगायां ई ही। आं सगळ्यां री जबरी पैठ, हाम-पाम हा पण मासीसा री महिमा न्यारी ही।

रिस्ता-नाता टंटोळ्यां, अै म्हारै नानाणै में कुटम रा मामोसा लागता, बांरै लारै परणीज नै आया हा। इण गना सूं मामीसा हुया पण म्हारै मां'सा रै नानाणै रै हिसाब सूं बांरा बैन लागता, इण वास्तै म्हारा मासीसा ई हा। म्हां टाबरां वास्तै बांरो मायतपणो जबरी छत्तर-छियां ही। अेक हदभांत निमळाई, अपणेस, दूजां री

421 ए, हनुवंत-ए, मार्ग-3, बीजेएस कॉलोनी, जोधपुर (राज.) 342006 मो. 9829202755

मदद सारू हर बगत त्यार रैवणो बांरै सभाव में हो। होळै-होळै बगत रो बायरो बगतो रैयो। म्हे टाबर सूं मोट्यार हुया अर आगै बध परा'र खुद टाबरां रा माईत बणग्या, पण मासीसा री अपणेस भर्‌या हिवड़ा मांय सूं झरती पोळमपोळ आसीसां आज भी चेतै आय जावै अर आंख्यां री कोरां आली व्है जावै। म्हारै माथै बांरो जबरो लाड रो हाथ सदा ई रैयो।

बठै पूग्यां, बांरै पांवाधोक लगावता जद बै माळा नै बठै ई मांचा माथै छोड, आसीसां देंवता थकां माथै-मूंडै रै लाड सूं हाथ फेरता। बीं बगत बांरी आंख्यां में सनेव रो तिरवाळो तिरण ढूकतो। बांरै आगै माथो निवायां, भगवान री मूरत आगै माथो निवायां तिरपती आवै जैड़ी बेथाग शांति री लैरां हबोळा मारती लखावती। बीं बगत आं आसीसां रो ऊंडो अरथ समझ नीं आया करतो पण आज जद स्वारथ री झळां, आखै मानखै री लैराती काची कूंपळां नैं काठी झुळस दी, म्हनैं बांरो बो सनेव, अपणेस, ऊंडी आसीसां री झड़ी रै मीठास भर्‌यै झरणै री सीळी पून रा फटकार री घड़ी-घड़ी याद आयां जावै। मन रै चौफेर बीं अपणायत रा लैलूर घिरोळा घालै।

सांझ री दीयाबाती री बगत आं मासीसा री, साधना में बैठ्या साधक जैड़ी छिब आंख्यां आगै घणी बार उतर जावै। बै सांझ री बगत देवी-देवतावां री फोटुवां आगै अगरबत्त्यां रै साथै दीवो जगाय, आंख्यां मींच्यां-मींच्यां कीं जेज पाळगोठी लगाय बैठता। साच्याणी बीं बगत इयां लखावतो कै बां फोटुवां मांयली देवी ई आय'र मून धार्‌यां बैठगी हुवै। जद बै आंख्यां खोल'र अगरबत्त्यां नैं फोटुवां आगै घुमावता, बांरै चैरै री आकरी पळपळाट करती सांतरी रंगत आपरी पकड़ में आखै कमरै नैं लेय लिया करती। बीं बगत बांरै चैरै साम्हीं घणो नीं झांक सकै हा। मन में इयां आवती कै इण बगत कीं वरदान मांग लेवां तो बो मिल सकै, पण कदैई कीं मांगणै री बीं बगत हिम्मत नीं पड़ी। हां, बीं बगत अेक शांति च्यारूंमेर पसर जावती अर बो आंगणो देवलोक रै टुकड़ै रै उनमान च्यानणो ढुळकावतो लखावतो।

ढळती दोपारी कै रात पड़्यां बातां रा ब्याळू करबाळी दोय-च्यार लुगायां भेळी व्हैती जद चुगलीरस परोसीजतो। इण सूं बातां में मिठास, रहस्य अर रोटी हजम करणै रो चूरण रो चटको सामल हुया करै। पण सुरसती मासीसा कीं जेज तो कानांढोळी कर'र कोई दूजी बात पोळावता, पछै इण बे-जचती बतरस रै खाम लगावण वास्तै कैय दिया करता, ''क्यूं पराई बुरी चींतो? इण सूं सुणै जकै नैं ई पाप लागै।'' साच्याणी वा बात बठै ई ठस व्है जाया करती। कोई दूजी हांसी-मसखरी री बात कै लोककथा रा पाना फिरोळीजणा सरू व्है जावता। उण बात में सगळा काठा डूब जावता। ग्यान-ध्यान, धरम-करम री बातां ई पोळाईजती। औ अचंभो आवतो कै अै आखै दिन आप-आपरा घरां में रैवण वाळी

लुगायां, इत्ती ऊंडी सोच री बात कठै सूं सीखली? पण लोकग्यान, लोकगीत, लोक-साहित्य इयां ई अेक सूं दूजां कनै पूगै। सिमरध हुवै। आज म्हैं सोचूं, जे वां बातां नैं सावळ-सी कागदां माथै मांड लेंवतो तो आज मोटो साहित्यकार बाजतो।

इण हथाई में आपरै कुटम-कबीलै री ओछी-लांबी, माड़ी-मंदी अर सखरी-सांतरी बात ई उखरेळीजती। आपसरी रो बिस्वास, ठीमरपणो अैड़ो हो कै छांनै री बात, छांनै ई रैय जावती। गांव तांई नीं पूगती। कोई रै दुख-दरद री बात साम्हीं आयां, दूजै दिन बीं री मदद सारू घर-घर में बा बात पूगती। जे कोई रै हारी-बेमारी रो ठाह पड़तो जद बीं नै आपरी जाणकारी रै हिसाब सूं कीं-न-कीं बूतै सारू भोगै पड़तो उपाय बताईजतो अर अबखाई रो निवेड़ो व्है जाया करतो। तकलीफ मिट्यां सगळै बातां चालती कै मासीसा सांतरो उपाय बतायो। बै नीं बतावता जद ई औ कैवीजतो, मासीसा री हथाई में बैठ्या जणै लुगायां बात बताई। बांरो भलो हुवै।

मधरै कद, गोर वरण, साधारण हाथ-पग पण अेक ओप, अेक कंवळास बांरै डील री ही। मूंडै रो उजास न्यारो ई हो। मारग में लारै चालतो आपरी मौज में बगतो मिनख जद बांरै बरोबर आय'र बांरै मूंडै साम्हीं झांकतो अर देखबाळा री अक्कड़ ढीली होय, नीची नस व्है जावती। चाल बदळ जावती। आ बांरी ऊरमा, बांरी साधना ही।

कोई नैं नंवो काम पोळावणो व्हैतो, बो आय बांनै पूछ्या करतो। बै कैय दियो, बियां ई काम पार व्है जाया करता। आ बांरै सदा साच बोलणै, कोई रो बुरो नीं चींतणो अर बख आवै जित्ती मिनखजाया अर जीव-जिनावरां री मदद करणै री भावना सूं बापर्‌योड़ी सगती ही। आ ऊजळी आतमा री ऊरमा ही। मिनख रा खोळिया नैं धोळोधप्प राखणै री खेचळ ही। आपां जाणां सगळा हां पण हियै में उतारणो, बियां ई बरताव करणो हरेक रै बूतै री बात कोनी।

मासीसा रै खुद रा बेटी-बेटा अर दूजां रा टाबरां में दुभांत बै नीं जाणी। बीं बगत कोई लावणो आयग्यो तो सगळां नैं बांट-चूंट पूरो कर्‌यो। कोई टाबर आखड़'र पड़ग्यो तो बीं नैं उठाणै वास्तै भाजता। पाटा-पूळी कर'र घरै भेजता। कोई रै अठै उच्छब, मान-मनवार, गीत-रीत में सामल व्हैता तो कोई रै हारी-बेमारी, आफत आयां, सगळां सूं पैली बठै पूग'र कीं उपाय सरू कर काढता। इण वास्तै ई लोग कैया करता, ''अै कद सोवै, कद जागै? औ ठाह ई नीं पड़ै।''

बात ई साची ही। बूढी-बडेरी लुगायां च्यार-पांच बजी उठ'र नितनेम सरू करती जद ई मासीसा आपरा चोक में ढळ्योड़ा मांचा माथै बैठ्या-बैठ्या माळा रा मिणियां सिरकावता ई निगै आया करता। रात री हथाई में किरत्यां ढळती जित्तै बैठ्या बतळाया ई

करता। इण माळा फेरणै रो परतख प्रमाण औ हो कै घाटै-नफै री बात घर में बरतीजो भलांई दूजां रै अठै, अै नेठाव ई राखता। घणै सोच, चिंता अर खुशी री बगत नै घणा राजी होय बडबोला बणता। माड़ी बात, नुकसाण हुयां अेकर अफसोस कर'र राम नैं सूंप देंवता कै रामजी थारी मरजी। घणी खुशी हुयां, रामजी रा गुणगान कै वाह सांवरा! इयां कैवता। हांसी-खुशी, दुख-दरद, घाटा-नफा में अेक दीठ, अेक भाव सूं अंगेजणो, अेक तराजू तोलणो हरेक रै बूतै री बात कोनी हुया करै। पण बां मांय ही। म्हारी जाण में आ ईज साची साधना ही। साची सीख। मिनखाजूण सुधारणो कैय सकां हां। बै साधारण गिरस्थी रा खोळिया में पूंचवान सती-जती ई हा।

जे कोई लुगाई, टाबर, स्याणो-समझणो बां सूं मिलबा आयग्यो, हाथ री माळा रा मिणिया बठै ई ढाब परा आयोड़ा नैं आव-आदर देय, सावळ बात बतळाता। दुख-सुख री पूछता। आयोड़ा रै हिसाब सूं चाय-पाणी, छाछ-दूध, कलेवा री मनवार ई करया करता। इणमें नेड़ै-आंतरै रो घणो भेद-भाव नीं व्हैतो। बांरै वास्तै सगळा ई बांरा हा। निरमळ नीर-सो हियो हुयां ई अैड़ो ब्योहार बरतीज्या करै। कोई रै दुख-तकलीफ, कै कोई भांत रो नुकसाण हुयां, बांरी आंख्यां में उदासी छाय जावती। बीं नैं हिमळास री बात कैय धीजो बंधवाता। कोई रै अठै री खुशी रा काम में हरखता आपरै मन रा कोड दरसावता। इण साथै ई आंकस अैड़ो कै घर में बेटा-बहू, टाबर बांरै आंख रै इसारै सूं ई समझ जाया करता।

बुढापा रो असर आपरी ठौड़ हो, पण और कोई मोटी बेमारी बै नीं भुगती। बगतसर साधारण खाण-पाण, पैराण में आपरी लाखीणी मिनखाजूण पूरा हौसला सूं पूरी करी। तंगी रा दिनां में ई दाळ-दळिया, छाछ-रोटी सूं घर री इज्जत बणाई राखी। कोई नैं ई घर बारै औ भेद नीं लागबा दियो कै अै कियांवाणी रोटी जीमै, कांई करै? घर री आबरू, ओप, अपणायत सदा सरीसी बणाई राखी।

जिण दिन इण संसार सूं आखरी राम-राम करया, न्हाया-धोया बैठ्या-बैठ्या माळा फेरै हा। मिणिया माळा रा आंगळ्यां बिचै थमग्या, नाड़ अेक पसवाड़ै लटकगी, सांसां थमगी, पीठ भींत रै सारै ही। इयां लखायो जाणै डोढी नाड़ करयां निरखता थकां कैवता हुवै—''सौरा रैयज्यो!''

म्हैं कदै-कदैई सोचूं कै और सती-जती कांई हुवै?

◆◆

विश्वनाथ भाटी

जुग रै जथारथ सागै समाजू हित सांधती : अदीठ डोर

जगती रै मांय हर छिण क्यूं न क्यूं घटणा घटती रैवै, पण बां घटणावां नैं देखणै रो सब रो ढंग न्यारो-न्यारो। अेक लिखारो उणरै मांय जुग रो जथारथ देख'र समाज रो हित सोधै अर अठै सूं ईज साहित्य रो जलम हुवै। राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर' री 'अदीठ डोर' ई इण दीठ सूं उपजी अेक सांतरी पोथी है। राजस्थानी कहाणियां रै इण संग्रै मांय कुल 13 कहाणियां सामल करीजी है। हरेक कहाणी रै मांय भोग्योड़ो जथारथ साव निजर आवै। समाजू अनुभवां नैं कल्पना रा गाभा पैराय'र कहाणियां रै मिस पढेसर्‌यां ताणी पुगाय'र लिखारो जठै साहित्य रो भंडार भरै, बठै ई अनुभवां री सांतरी सीख ई मनरंजण री बणगट भेळी देवै। इण दीठ सूं राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर' री आं कहाणियां नैं बांचतां थकां इयां लागै कै आपां कहाणियां रै वां पात्रां रै साथै-साथै ई आगै बधता होवां। संग्रै री पैली अर सिरै नांव कहाणी 'अदीठ डोर' रै मांय आज रै जुग रै बदळतै सामाजिक जथारथ रो सांतरो चितराम साम्हीं आवै। रंजीता अर संध्या दोवूं सहेल्यां रो मिलाप होळै-होळै प्रेम रै मांय बदळतो जावै अर उणरो विगसाव होय'र समलैंगिक ब्यांव रो रूप लेय लेवै। समाज री दीठ मांय समलैंगिक ब्यांव करणै नैं मानता नीं है। समाज इण बात नैं नीं मानै कै छोरी, छोरी सूं अर छोरो, छोरै सूं ब्यांव रचावै। समान लिंगी रै प्रति बधतो प्रेम जको विपरीत लिंगी नैं दरकिनार कर देवै, आ बात समाज कदैई मानणै सारू राजी नीं

वार्ड नं. 9, मालासी मिंदर रै कनै, तारानगर (चूरू) मो. 9413888209

हुवै। विग्यान अर सरीर क्रिया री दीठ सूं ई आ बात ओपती नीं है। 'अदीठ डोर' कहाणी रै मांय इणीज नूंवै विसय नैं उठावतां थकां राजेन्द्र शर्मा घणै सांतरै ढंग सूं आज रै समाजू बदळाव रो चितराम उकेरयो है।

'मझधार' अर 'भरमजाळ' दोवूं कहाणियां रै मांय तिरसायै प्रेम रा न्यारा-न्यारा रूप देखणै सारू मिलै। मझधार री नायिका शिवांगी, मोहित सूं प्रेम करतां थकां आ बात भूल जावै कै वा दो टाबरां री मां है। वा सहकर्मी मोहित री समझावणी सूं ई नीं समझै अर अेक दिन दोवूं सैंग क्यूं छोड-छाड'र भाज निकळै। उण बगत ई शिवांगी रै हियै मांय दोवूं टाबरां री अणूंती चितार उठै अर बा अणमणी होय जावै। ममता अर प्रेम रै बिचाळै जंग माचै अर छेकड़ ममता जीत जावै। बै पलायत री बा जातरा बिचाळै ई छोड'र पाछा बावड़ जावै। 'भरमजाळ' रो प्रेम दूजै ढंग रो है। कहाणी रो नायक सुरेश नूंवै स्कूल मांय आवै अर बठै सहकर्मी अध्यापिका मेघना सूं मिलाप हुवै। मेघना, सुरेश रै बणायोड़ा चितरामां सूं हियैतणो लगाव करै अर खुद ई चित्र बणावणै री इंच्छ्या करै। मेघना अर सुरेश दोवां रो मेळ बधतो जावै अर बां रा मन मिलणै सूं निजू भेद ई चौड़ै आवै। पण सुरेश इण प्रेम रो अरथ वासना रै साथै जोड़ लेवै अर मेघना रै डील रो परस करणै री भूल कर बैठै। छेकड़ भरमजाळ टूटै अर पछतावै री खटास भोगणी पड़ै। 'चिंत्या फिकर' कहाणी रो नायक हरिप्रसाद आपरै बहू-बेटा रै आळसीपणै सूं घणो चिंत्या-फिकर मांय है। उणरी जोड़ायत टाबरां री मेर लेंवती थकी हरिप्रसाद नैं बरजै, पण हरिप्रसाद आपरै सुभाव मुजब मन ई मन मांय खीझै। कोरोना रै मांय लोकडाउन री बेळां दोपारी री बगत हालात रा मारयां मजूरां री दसा माथै तरस खावता बेटो मनोज अर बहू सरिता वांरै साय रोट्यां बणावै। हरिप्रसाद आळसी बहू-बेटा रै मांय सेवाभाव नैं लेय'र जाग्योड़ी भावना देख'र अणूंतो राजी हुवै। बो समझ जावै कै मिनख नै हालात ई जिम्मेदारी रो पाठ सिखाय सकै।

'अेक पोचो संपादक' कहाणी सरकारी महकमां मांय झूठी स्यान अर मान बडाई करणैवाळां मिनखां रै मुंह माथै आकरो थप्पड़ है। 'बाइज्जत बरी' कहाणी आतम गलानि सूं निबळै हुयै मास्टर रामरिख नैं आपरै नांव माथै लागी काळख मिटणै रो अवसर आयो जाण'र यूं लखावै, जाणै वो किणी लांबै चालतै मुकदमै सूं बाइज्जत बरी हुयग्यो हुवै। 'किफायत' कहाणी रो रामदयाल हर बगत किफायत अर नेम-कायदां माथै चालणवाळो मिनख। कबाड़ी जद कबाड़ री जुगत मांय उणरी जोड़ायत सूं कबाड़ लेवणै री जुगत मांय पचै, रामदयाल बोदी साइकल रो मोल आपरै मन मुजब लेवणो चावै। कबाड़ियै रै छोरै रो मन साइकल माथै आयग्यो पण रामदयाल अर कबाड़ियै री मोल-भाव माथै अेक मत नीं बणै। अठै कहाणी रो मरम प्रगटै। बात-बात मांय किफायत रै गेलै चालणियो मिनख रामदयाल चाणचकै ई उदार हुय जावै अर साइकल अर कबाड़ सूं बापरयोड़ा रुपिया दोवूं ई कबाड़ी रै छोरै नैं साइकल संवारणै सारू कबाड़ी नैं देय देवै।

'लूंठो करजो' रो नायक नेतराम करजै सूं दबीज्योड़ो मिनख। सेठां रै रात-दिन खटै अर उण आस माथै ई बेटी रै ब्यांव री बगत सेठां सूं करजो लेवणै री मनस्या राखै। सेठ रुपिया सारू सफा नट जावै, जकै सूं नेतराम रो मन खराब हुय जावै। बो दोय दिनां तांई सेठां री दुकान नीं जावै। सेठां रो बेटो अनिल नेतराम नैं बुलावणै सारू उणरै घरां जावै। बठै बीं री मुलाकात नेतराम री जोड़ायत अनिता सूं हुय जावै जकी अनिल रै साथै पढ्योड़ी ही। अनिल पचास हजार रुपिया आपरै निजू खातै सूं लाय'र अनिता नैं हाथ उधारा देय देवै अर भणाई बगत साथै रैयोड़ी प्रीत रो करजो उतारणै री आफळ करै। संग्रै री बीजी कहाणियां 'छेकड़ली गोठ', 'गुरु-दिछणा', 'प्रास्चित' आद ई पढणजोग सांतरी कहाणियां है।

इण संग्रै री सैंग कहाणियां आपरी बणगट सारू पढेसरयां नैं कठै न कठै टोकळै अर चेतना रो सनेस देंवती लखावै। लिखारा राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर' री आफळ आ ईज रैयी कै पढेसरयां नैं कहाणी बांचता थकां कीं मिनखाळू दीठ मिल सकै अर उण दीठ सूं समाज नैं कीं सीख ई मिल सकै। हरेक कहाणी रो क्यूं न क्यूं उद्देश्य है, जको पढेसरी तांणी जरूर पुंचैलो। कहाणी रै मांय संवाद रो खास मैतब हुवै अर औ मैतब अदीठ डोर कहाणी-संग्रै री कहाणियां रै मांय सबळी ठौड़ बणावै। भासा ई मूंढै लागती अर बोलताउ, जकी कठैई अपरोगी कोनी लागै। अेक गुण हुवै कोड जगावणै रो। आज पढेसरयां मांय पढणै रो कोड कीं कमती हुयो है, क्यूंकै उणरो मन कथानक रै मांय रमै कोनी, पण राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर' री सैंग कहाणियां पाठक नैं छेकड़ तांणी बांध्यो राखै। औ कहाणी-संग्रै साहित्य लोक रै मांय सरायो जावैलो अर घणो दाय आवैलो, ओ बिस्वास हुवै। हां, अेक बात जरूर खटकै, केई कहाणियां रा सिरैनांव जरूर कथानक साथै कीं कमती रळता लागै। पोथी री छपाई सांतरी अर पूठै रो चितराम ई नूंवी कला सूं रचीज्योड़ो घणो ओपतो। आसा अर बिस्वास है कै कहाणी-संग्रै मांय लिखारै री मैणत सफळ हुयसी।

◆◆

पोथी : अदीठ डोर
विधा : कहाणी-संग्रै
लेखक : राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'
संस्करण : 2022
प्रकाशक : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति
श्रीडूंगरगढ़ 331803
पाना : 120
मोल : 250 रुपिया

कूंत

नन्दू राजस्थानी

मुरधर की माटी को मोल बतावती : होइ सुहागण रेत

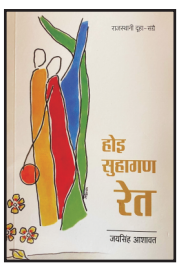

पोथी
होइ सुहागण रेत
विधा
दूहा-संग्रै
कवि
जयसिंह आशावत
संस्करण
2021
प्रकाशक
बोधि प्रकाशन
जयपुर (राज.)

जद कवि काव्य-कळस सूं कुंकुं नैं कमल में भर'र मुरधर की माटी पै लकीरां खींचबा को काम करै छै तो जाणै 'हो जावै छै रेत भी सुहागण'। ईं बात को जींतो-जागतो सबूत छै जयसिंह आशावत री पोथी, जींका हर दूहा में अठा की संस्कृति के चितराम दीखै छै।

आशावत सा हाड़ौती को अस्यो नांव छै जीस्यूं केई अणजाण कोइनै। हाड़ौती कै ऊपरली आडी अर ढूंढाड़ कै लंकाऊ में अेक इलाको दै—'नागरचाळ' जठा सूं सारा राजस्थान में काव्य की सौरम फैलाबा हाळा फूल को नां ही छै जयसिंह आशावत। व्हांका काव्य की क्यारी में उठा की खुसबू भी आवै छै। मतलब वानै काव्य में ठेठ नागरचाळी बोली को भी प्रयोग करयो छै।

यो वांको पैलो दूहा-संग्रै कोइनै। ईस्यूं पैली भी वै 'अब पाती कांई लिखां' दूहा-संग्रै पाठकां कै साम्हीं ला चुक्या जो भी राजस्थानी भासा में ई छै। राजस्थानी कै लेरां-लेरां हिंदी दूहा सरजण में भी कवि पाछै न हट्या। वांनै 'नदी सरोवर झील' जिसी कृति लिख'र प्रकृति आडी भी आपणो चेत करायो छै।

असाढ का दिन आतां ई सब का मन में अेक ई आस रैवै छै, कै अब तो ताती झक्कर नै मेटबा खा'ण बरखा की दो-च्यार बूंदां आ जावै तो धरा की रेत सैळी हो जावै। कवि लिखै भी छै :

अम्बर काळा बादळा, धरती हरिया खेत।
बरसै सावण भादवो, होइ सुहागण रेत।।

गांव-लक्ष्मीपुरा (टोडा का गोठड़ा), देवली, टोंक (राज.) 304802 मो. 9929492348

 ISSN : 2320-0995

पोथी को पैलो पानो सदा की नांई बाणी की देवी नै समरपित छै, तो दूजो आशापुरा माई नै, ज्यो वांकी कुळदेवी छै। फेर राजस्थान को गौरव बतावता दूहा :

चितरण युद्ध कबन्ध को, मीसण करै बखाण।
सीस कटै अर धड़ लड़ै, म्हारै राजस्थान।।

कवि पाठकां नै भांति-भांति की सीख देबो चावै छै, जस्यां पर्यावरण बचाबो, कुप्रथावां सूं बचबो, भ्रष्टाचार मेटबो, जनसंख्या रोकणो। मोबाइल नै देहात तांई जाय'र कांई काम कर्‌यो, ई की बानगी :

धर मोबाइल जेब में, गाणा सुणै गुवाळ।
जंगळ में मंगळ करै, नांचै दे दे ताळ।।

असी बातां सूं कवि समै नैं बळवान बता'र सदा साथ रैबा की बात करै छै। आज समाजमें होती बुरायां नैं अर घर-परिवार में बेटी का महत्त्व नैं बतावता दूहा :

बेटी पूछै माइ सूं, मम्मी बोलो आप।
म्हांनै दो-दो टूकड़ा, भैया नै क्यूं धाप।।

मां-बाप नैं भूलज्यो मती, अस्यां को संदेस देखो :

खुद भूखी रै पाळल्या, जींनै बेटा च्यार।
च्यारां सूं उठतो नहीं, बूढ़ी मां को भार।।

कवि पोथी में धरम नैं जीवतो राख'र मिनखजात नैं औकात बतावै छै :

लकड़ी बांसों लागतां, तगड़ो हुयो कुल्हाड़।
काटै ल्हौ की धार सूं, रूंख बचै न झाड़।।
ज्यो देखो अर ज्यो सुणों, जांच परख द्यो आंक।
फेर करो बसवास जद, गैराई सूं झांक।।

बेईमानी की बानगी का रूप में अेक दूहो :

मिली भगत कर सेठ सूं, तोलै माल हमाल।
फर्जी कांटा बाट को, कर-कर इस्तेमाल।।

खरी-खरी बातां करतां थकां :

घणा-घणा उपदेश दे, दे'र घणा दृष्टांत।
जद खुद कै जीवां पड़ी, भूल गियो सिद्धांत।।

लोकतंत्र में हो रिया राजतंत्र नैं कवि कस्यां बतावै, देखो :

बाप जीम थाळी गियो, बेटा नै पकड़ा'र।
अब पोता का हाथ में, बाकी रिया निहार।।

कवि प्रेम-सुंदरता नै सबद देय'र बखाण करै छै, कै :

जग में जोड़ी सांतरी, ईशर अर गणगोर।
प्रेम समरपण वां जिसो, दिखै न दूजी ठौर।।

कवि नै वां लोगां की बात भी करी छै ज्यो चारवाक दरसण न मान'र जीवण भोगबो चावै छै :

घी पीणू छै घी पियो, लेल्यो रकम उधार।
खूब जियो सुख सूं जियो, करणू नहीं चुकार।।

उन्दाळा की गर्मी अर कवि की कलम की व्यंजना देखो :

तपै दपैरी जेठ की, बाजै जबरी तूण।
खड़ी खेजड़ी खेत में, खरी जूझती जूण।।

'पणघट' अर 'बैलगाडी' जस्या पात्र पोथी में समेटबो कवि को खोवती संस्कृति की आड़ी आंगळी करबो छै :

अब गांवां में बी नहीं, नीर भरै पणिहार।
बूढो पणघट अेकलो, जियो जमारो हार।।
सगड़ करांची तांगड़ी, तांगों ठोकर नांव।
गाडी चूल्हा पीढ़ की, अब दीखै न गांव।।

कवि को बडोपण यो छै कै वै खुद नै कदै भी बडो न बतावै छै :

कांई होती व्यंजना, न अभिधा को ज्ञान।
समझ न पाऊं लक्षणा, माफी द्यो भगवान।।
बेगा तजो बुराई नै, मत होवो बर्बाद।।

समाज में सरकार का भ्रष्ट काम बुराई की जड़ छै। यांनै समाज में गैरी दरार कर राखी छै, भुगतणो गरीब नैं ई पड़ै छै :

ज्यां'क मेड़ी माळीया, घर में मोटर कार।
चैनित वै सरकार सूं, सुख भोगै मक्कार।।

जयसिंह आशावत की या पोथी घणो ई जस कमायो अर और भी कमावै, या ई म्हारी आस छै। वै अस्यां की घणी पोथ्यां म्हांकै साम्हीं लाता रैवै, जीस्यूं अेक नूंवी पीढी त्यार हो सकै। म्हारी दीठ आपनै सूंपतां थकां पोथी सारू मोकळी बधायां।

◆◆

सन्तोष शेखावत

आंख्यां आगै बीत्योड़ी बातां रो बुगचो : दीठ दरसाव

राजस्थानी कवयित्री आदर जोग निर्मला राठौड़ रो रचित राजस्थानी काव्य संग्रै 'दीठ दरसाव' पोथी पढणै रो सौभाग म्हनैं मिल्यो।

निर्मला जी री पोथी नैं इण दिनां अेकर तो बांच लीवी ही पण 'दीठ दरसाव' पोथी में अैड़ा ऊंडा सबद मायड़ भासा रा मांड्योड़ा है कै अेकर फेरूं पोथी बांचण रै सागै मायड़ रा सबद छांटणै अर लिखणै रो काम चाल रैयो है। आस करूं, अै मारवाड़ी रा सबद म्हनैं म्हारी रचनावां में घणो सैयोग करैला।

'दीठ दरसाव' पोथी मुगत कवितावां रो संग्रै है अर अेक-अेक कविता री अंजसजोग खासियत आ है कै जद आं कवितावां नैं पढां तो निजरां साम्हीं जाणै कोई चलचितराम चाल रैयो है।

इण पोथी रै मांय कवयित्री सीधा पढेसर्‌यां तांई आपरै हियै रा भाव पुगावता निजर आवै। हर कविता रो रचाव जिण ढंग सूं कर्‌यो गयो है, लागै आंख्यां रै साम्हीं बीत्योड़ी घटणावां अर बातां नैं सबद रूपी मिणियां में पिरोवणै री कोसिस करीजी है।

'दीठ दरसाव' पढण आळा पाठकां नैं लागै जाणै इण पोथी में मांड्योड़ी हरेक बात पढेसर्‌यां रै जीवण में बीत्योड़ी हुवै। 'मुरधर' माथै लिख्योड़ी रचना जठै आपां नैं बेकळू रेत रै धवळै धोरा मांय ले जावै तो 'मां' माथै लिखी कविता रो आखर-आखर हियो हिलाय देवै।

गांव-बरड़वा, पोस्ट-छोटी बेरी, जिला-नागौर (राज.) 341551 मो. 9166121034

'बाळपणै' री कविता में कवयित्री बीत्योड़ै बचपन रो चितराम नैणां साम्हीं राख देवै।

'दीठ दरसाव' काव्य संग्रै में नारी जीवण रो ई कवयित्री अंतस रै आखरां मुजब चितराम उकेरया है। नारी रै कोमल हिवड़ै री भावना रा भावां नैं इण भांत आखरां मांय उकेरया है कै पोथी बांचण आळी हर लुगाई नैं मैसूस होवै कै आ तो म्हारै जीवण माथै ईज रच्योड़ी है।

म्हारै मत मुजब किणी कविता या रचना री सारथकता तद ईज हुवै जद रचनाकार सीधो पाठकां रै हियै सूं जुड़ जावै अर पढेसरी नैं रचाव रा आखर खुद रै भावां नैं उजागर करतो लखावै। आदरजोग कवयित्री निर्मला राठौड़ जीजा री भासा अर बात राखणै रो रळियावणो तरीको बांरी कवितावां नैं साथ्रकता री इण कसौटी माथै सौ टक्का खरी उतारै।

म्हारी अर म्हारै आखरां री इत्ती खिमता तो कोनी कै निर्मला जी री इण पोथी री विसेसतावां म्हैं पूरी तरै सूं मांड सकूं, पण फेर ई पोथी पढती बगत जका ई भाव म्हारै अंतस में आया बांनै आखरां रो रूप देवणै री अेक छोटी-सी कोसिस कीनी है। कवयित्री निर्मला राठौड़ नैं अेकर फेरूं अंतस री ऊंडाई सूं घणै मान बधाई रै सागै सादर प्रणाम अरज करूं।

◆◆

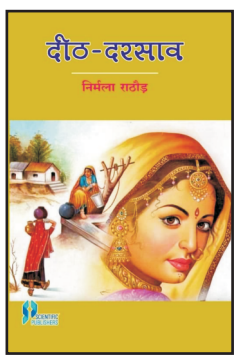

पोथी : दीठ दरसाव

विधा : कविता-संग्रै

कवयित्री : निर्मला राठौड़

संस्करण : 2022

प्रकाशक : साइंटिफिक पब्लिशर्स
जोधपुर (राज.)